

तीन मिडकैप फंड ने किया बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन

- » व्हाइटओक, एडेलवाइज़ और निप्पॉन इंडिया ने दिया खूब रिटर्न
- » निवेश से पहले जोखिम और लागत को समझना बेहद जरूरी
- » मिडकैप में ज्यादा रिटर्न की संभावना के साथ उतार-चढ़ाव भी अधिक
- » तीनों फंडों ने अलग-अलग अवधि में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा
- » पिछले प्रदर्शन को भी भविष्य की गारंटी का मानें

बिजनेस डेस्क

मिडकैप न्यूउअल फंड उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो बड़ी कंपनियों से छोटी, लेकिन स्मॉलकैप कंपनियों से अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। इनमें विकास की संभावनाएं मजबूत हो सकती हैं, लेकिन बाजार में गिरावट आने पर इनका उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है। हाल के आंकड़ों में मिडकैप सेगमेंट की रफ्तार कुछ धीमी हुई है। 10 सितंबर 2026 तक एक साल में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% रहा, जबकि तीन साल में इसका सालाना औसत रिटर्न करीब 15% रहा। ऐसे माहौल में यह देखना महत्वपूर्ण हो जाता है कि कौन-से सक्रिय मिडकैप फंड अपने बेंचमार्क से आगे रहे हैं। इविवर्टीमास्टर की 30 से अधिक फंडों की स्क्रीनिंग में तीन योजनाएं सामने आईं व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड, एडेलवाइज़ मिड कैप फंड और निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड। इस विश्लेषण में रिटर्न के साथ जोखिम-समायोजित प्रदर्शन को भी देखा गया। आंकड़े 10 सितंबर 2026 तक के हैं।

1. व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड

यह तीनों में अपेक्षाकृत नया फंड है। सितंबर 2022 में शुरू हुए इस फंड ने उपलब्ध अवधि में बेंचमार्क से काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। एक साल में फंड का रिटर्न 14.92% रहा, जबकि निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% था। तीन साल में फंड ने 21.73% सालाना रिटर्न दिया, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% रहा। इस फंड की खासियत इसका अपेक्षाकृत विविध पोर्टफोलियो है। मैक्स फाइनेंशियल सर्विसेज, भारती हेक्साकॉम, फेडरल बैंक, लॉरेस लैब्स और कोफोर्ज इसकी प्रमुख हिस्सेदारी में शामिल हैं। शीर्ष होल्डिंग का वजन भी बहुत ज्यादा नहीं है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 15.86 रही। शार्प अनुपात 0.33 और सॉर्टिनो अनुपात 0.62 रहा। ये आंकड़े बताते हैं कि उपलब्ध तीन साल की अवधि में फंड ने जोखिम के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन किया।

2. एडेलवाइज़ मिड कैप फंड

एडेलवाइज़ मिड कैप फंड का इतिहास बाकी दोनों की तुलना में लंबा है। यह फंड दिसंबर 2007 में शुरू हुआ था और इसके पास अलग-अलग बाजार परिस्थितियों का अपेक्षाकृत लंबा रिकॉर्ड है। पांच साल में इसने 18.89% और सात साल में 25.40% सालाना रिटर्न दिया। इसी अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 16.52% और 22.68% रहा। तीन साल में फंड का रिटर्न 20.65% रहा, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% था। फंड का निवेश वित्तीय कंपनियों और बाजार से जुड़ी कुछ कंपनियों की ओर अपेक्षाकृत अधिक रहा है। इसके पोर्टफोलियो में एमसीएक्स, बीएसई, फेडरल बैंक और एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक जैसी कंपनियां शामिल हैं। यही सेक्टर झुकाव इसके प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.61 रही, जो इन तीनों में सबसे अधिक थी। शार्प अनुपात 0.30 और सॉर्टिनो अनुपात 0.56 रहा। इस फंड की एक महत्वपूर्ण बात इसका लंबा ट्रैक रिकॉर्ड है। हालांकि, निवेशकों को यह भी देखना चाहिए कि मौजूदा फंड मैनेजमेंट टीम के कार्यकाल और पूरे ऐतिहासिक प्रदर्शन में कितना अंतर है।

3. निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड

निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड तीनों में सबसे पुराना है। अक्टूबर 1995 में शुरू हुआ यह फंड कई बाजार चक्रों से गुजर चुका है। इसके लंबे इतिहास में डाट-कॉम संकट, 2008 की वैश्विक वित्तीय मंदी, टेपर वेट्टम, नोटबंदी, कोविड और मिडकैप में आई बड़ी गिरावट जैसे दौर शामिल हैं। एक साल में फंड ने 8.44% तीन साल में 17.73%, पांच साल में 18.31% और सात साल में 24.11% सालाना रिटर्न दिया। संबंधित अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 7.19%, 14.92%, 16.52% और 22.68% रहा। इससे पता चलता है कि उपलब्ध सभी प्रमुख अवधियों में फंड का रिटर्न बेंचमार्क से ऊपर रहा। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.07 रही। शार्प अनुपात 0.27 और सॉर्टिनो अनुपात 0.51 रहा। फंड का आकार करीब 39,100 करोड़ रुपये बताया गया है, जो इन तीनों में सबसे बड़ा है। बड़ा आकार एक तरफ मजबूत निवेशक को दर्शाता है, लेकिन मिडकैप क्षेत्र में बहुत बड़े फंड के लिए छोटी कंपनियों में बड़ी हिस्सेदारी बनाना अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष योगदान व्यय अनुपात करीब 0.81% है।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

मिडकैप फंड में पिछले रिटर्न को देखकर निवेश करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। इस श्रेणी में शेयरों की कीमतों में बड़े उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। इसलिए निवेशकों को कम से कम पांच बातों पर ध्यान देना चाहिए—फंड का निवेश उद्देश्य, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, फंड मैनेजर का रिकॉर्ड, खर्च और अपने पोर्टफोलियो में मिडकैप का उचित हिस्सा। इसके अलावा फंड के आकार को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। बहुत बड़े फंड के लिए छोटी और मझोली कंपनियों में पर्याप्त हिस्सेदारी बनाना मुश्किल हो सकता है, जबकि छोटे फंड में दूसरी तरह के जोखिम हो सकते हैं।

एसआईपी निवेशकों के लिए क्या समझना जरूरी

मिडकैप फंड को आम तौर पर लंबी अवधि के निवेश के नजरिए से देखना चाहिए। बाजार में गिरावट के दौरान एसआईपी जारी रखने के लिए निवेशक में पर्याप्त जोखिम क्षमता होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, किसी फंड में पिछले तीन या पांच वर्षों में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा है, इसका अर्थ यह नहीं है कि अगले तीन या पांच वर्षों में भी ऐसा ही होगा। बाजार की परिस्थितियां, कंपनियों की कमाई, मूल्यांकन और फंड की निवेश रणनीति बदल सकती हैं। इसलिए निवेश का निर्णय केवल किसने सबसे ज्यादा रिटर्न दिया के आधार पर नहीं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि, जोखिम क्षमता और पहले से मौजूद पोर्टफोलियो को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

फंड चुनते समय रिटर्न संग जोखिम पर ध्यान दें

व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड के आंकड़े उपलब्ध छोटी अवधि में मजबूत रहे हैं, एडेलवाइज़ मिड कैप के पास लंबा और मजबूत प्रदर्शन रिकॉर्ड है, जबकि निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप का इतिहास तीनों में सबसे लंबा है। तीनों की निवेश शैली, पोर्टफोलियो संरचना, फंड का आकार और लागत अलग-अलग हैं। इसलिए इन आंकड़ों को निवेश की गारंटी या भविष्य के रिटर्न का संकेत नहीं माना जाना चाहिए। मिडकैप फंड चुनते समय रिटर्न के साथ जोखिम, खर्च, पोर्टफोलियो और निवेशक की अपनी परिस्पति-वितरण रणनीति को भी समान महत्व देना जरूरी है।

स्मार्ट बीटा फंड : दिला सकता है बढ़िया मुनाफा, जोखिम भी ज्यादा नहीं

कम लागत में बेहतर रणनीति से करें निवेश

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

न्यूउअल फंड में निवेश करने वाले लोगों के सामने अब केवल पारंपरिक इंडेक्स फंड और सक्रिय रूप से संचालित फंड ही विकल्प नहीं हैं। स्मार्ट बीटा फंड भी निवेश की एक ऐसी रणनीति है, जो पैसिव निवेश की नियम-आधारित प्रक्रिया को अलग-अलग फैक्टर के आधार पर शेयर चुनने की रणनीति से जोड़ती है। इनका उद्देश्य बाजार के पारंपरिक इंडेक्स से अलग तरीके से निवेश करना और जोखिम के मुकाबले बेहतर रिटर्न हासिल करने की कोशिश करना होता है। हालांकि, स्मार्ट बीटा का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि फंड हर समय बाजार या सामान्य इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करेगा।

साधारण इंडेक्स फंड किसी तय इंडेक्स की संरचना को दोहराने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इंडेक्स में जिस कंपनी का जितना वजन है, फंड भी लगभग उसी अनुपात में उसमें निवेश करता है। स्मार्ट बीटा फंड इससे अलग तरीके से काम करते हैं। इनमें शेयरों का चयन और उनका वजन पहले से तय नियमों के आधार पर किया जाता है। यानी फंड मैनेजर की व्यक्तिगत पसंद के बजाय किसी निर्धारित रणनीति या फैक्टर को प्राथमिकता दी जाती है। यही वजह है कि स्मार्ट बीटा को सक्रिय और निष्क्रिय निवेश के बीच की रणनीति के तौर पर देखा जाता है। इसमें सक्रिय फंड की तरह अलग-अलग विशेषताओं वाले शेयर चुने जाते हैं, लेकिन चयन प्रक्रिया नियम-आधारित होती है।

चार प्रमुख फैक्टर को समझें

- वैल्यू** : इस रणनीति में ऐसे शेयरों पर ध्यान दिया जाता है जिन्हें निर्धारित वित्तीय मानकों के आधार पर उनकी कीमत की तुलना में आकर्षक माना जाता है। इसका आधार मूल्यांकन से जुड़े आंकड़े हो सकते हैं।
- क्वालिटी** : इसमें मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों को प्राथमिकता देने की कोशिश होती है। लाभप्रदता, कर्ज, आय की स्थिरता और अन्य वित्तीय मानक इसके आधार हो सकते हैं।
- मोमेंटम** : इसमें हाल के समय में बेहतर प्रदर्शन करने वाले शेयरों की चाल को महत्व दिया जाता है। रणनीति का आधार यह होता है कि कुछ शेयरों में बनी सकारात्मक या नकारात्मक गति कुछ समय तक जारी रह सकती है।
- लो वोलैटिलिटी** : इसमें अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव वाले शेयरों पर ध्यान दिया जाता है। इसका उद्देश्य पोर्टफोलियो में बाजार की तुलना में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने की कोशिश करना होता है।

साधारण इंडेक्स फंड किसी तय इंडेक्स की संरचना को दोहराने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इंडेक्स में जिस कंपनी का जितना वजन है, फंड भी लगभग उसी अनुपात में उसमें निवेश करता है। स्मार्ट बीटा फंड इससे अलग तरीके से काम करते हैं। इनमें शेयरों का चयन और उनका वजन पहले से तय नियमों के आधार पर किया जाता है। यानी फंड मैनेजर की व्यक्तिगत पसंद के बजाय किसी निर्धारित रणनीति या फैक्टर को प्राथमिकता दी जाती है। यही वजह है कि स्मार्ट बीटा को सक्रिय और निष्क्रिय निवेश के बीच की रणनीति के तौर पर देखा जाता है। इसमें सक्रिय फंड की तरह अलग-अलग विशेषताओं वाले शेयर चुने जाते हैं, लेकिन चयन प्रक्रिया नियम-आधारित होती है।

कैसे अलग होता है पोर्टफोलियो पारंपरिक बाजार पूंजीकरण आधारित इंडेक्स में बड़ी कंपनियों का वजन उनके बाजार मूल्य के आधार पर अधिक होता है। स्मार्ट बीटा रणनीति में ऐसा जरूरी नहीं है। मान लीजिए कोई फंड क्वालिटी फैक्टर पर आधारित है। तब वह बाजार पूंजीकरण की बजाय कंपनियों की वित्तीय गुणवत्ता से जुड़े मानकों के आधार पर शेयरों का चयन कर सकता है। इसी तरह मोमेंटम फंड में हाल की कीमत की चाल महत्वपूर्ण हो सकती है।



निवेशकों को क्या फायदे मिलेंगे

- नियम-आधारित निवेश : शेयरों के चयन के लिए पहले से निर्धारित नियम होते हैं। इससे निवेश प्रक्रिया अपेक्षाकृत व्यवस्थित और पारदर्शी रहती है।
- कम लागत की संभावना : सक्रिय रूप से संचालित फंड की तुलना में स्मार्ट बीटा फंड की लागत आम तौर पर कम हो सकती है, हालांकि हर फंड का वास्तविक खर्च अलग होता है।
- विशेष रणनीति का विकल्प : निवेशक वैल्यू, क्वालिटी, मोमेंटम या लो वोलैटिलिटी जैसे किसी खास फैक्टर पर आधारित रणनीति चुन सकते हैं।
- पोर्टफोलियो में विविधता : पारंपरिक इंडेक्स से अलग कंपनियों और अलग वजन वाली कंपनियों में निवेश होने के कारण यह निवेश पोर्टफोलियो में एक अलग रणनीतिक एक्सपोजर दे सकता है।

सेक्टर या शेयरों का झुकाव बढ़ेगा

फैक्टर आधारित निवेश का एक दूसरा जोखिम कंसंट्रेशन है। किसी खास नियम के कारण पोर्टफोलियो में कुछ सेक्टर या कंपनियों की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है। ऐसे में यदि उस सेक्टर या कंपनियों के समूह का प्रदर्शन कमजोर रहता है तो पूरे फंड के रिटर्न पर असर पड़ सकता है। इसलिए फंड की शीर्ष होल्डिंग, सेक्टर आवंटन और इंडेक्स की निर्माण पद्धति को समझना जरूरी है।

बार-बार रीबैलेंसिंग से बड़ेगी लागत

कुछ स्मार्ट बीटा रणनीतियों में समय-समय पर पोर्टफोलियो को रीबैलेंस किया जाता है। यानी तय नियमों के अनुसार कुछ शेयरों का वजन बढ़ाया या घटाया जाता है और कुछ शेयरों को शामिल अथवा बाहर किया जाता है। मोमेंटम जैसी रणनीतियों में यह बदलाव अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। ज्यादा बदलाव का मतलब लेनदेन की लागत और पोर्टफोलियो में शेयरों के आने-जाने की दर बढ़ना हो सकता है। इसका असर फंड के वास्तविक रिटर्न पर पड़ सकता है।

सैलरी आते ही पैसा खत्म हो जाता है तो बदलें कुछ आदतें

बिजनेस डेस्क

हर महीने सैलरी आते ही लगता है कि इस बार खर्च संभालकर चलेंगे, लेकिन कुछ ही दिनों बाद खाते का बैलेंस तेजी से कम होने लगता है। महीने के आखिर में जरूरी खर्चों के लिए भी पैसों का हिसाब लगाना पड़ता है। ऐसी स्थिति को हमेशा कम आय का नतीजा मानना सही नहीं है। कई बार बिना बजट खर्च करना, छोटी-छोटी खरीदारी को नजरअंदाज करना और बचत को महीने के आखिर के लिए छोड़ देना भी आर्थिक दबाव की बड़ी वजह बनता है। पैसे को बेहतर तरीके से मैनेज करने के लिए बहुत जटिल वित्तीय रणनीति की जरूरत नहीं होती। कुछ आसान आदतों को नियमित रूप से अपनाना आय और खर्च के बीच बेहतर संतुलन बनाया जा सकता है।

सैलरी आते ही पहले बचत करें

सबसे आम गलती यह होती है कि लोग पूरे महीने खर्च करने के बाद बची रकम को बचत करने के लिए रखते हैं। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बचने के लिए बहुत कम पैसा रह जाता है। इसका आसान तरीका है, 'पहले बचत, फिर खर्च'। सैलरी खाते में आते ही तय रकम को अलग बचत खाते या निर्धारित निवेश में भेज दें। इससे खर्च करने के लिए उपलब्ध पैसा अपने आप सीमित हो जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की मासिक आय 50,000 रुपये है तो वह अपनी क्षमता के अनुसार पहले ही 5,000 या 10,000 रुपये अलग कर सकता है। इसके बाद बाकी रकम से महीने का खर्च चलाया जाए। बचत की राशि छोटी हो तो भी नियमितता ज्यादा महत्वपूर्ण है। इससे महीने के बीच में पैसा खत्म होने की संभावना कम होगी।

» कमाई कितनी है, इससे ज्यादा जरूरी है उसका सही बंटवारा

» पहले बचत, फिर खर्च और निवेश का नियम अपनाएं

» महीने के आखिर में होने वाली पैसों की तंगी से बच सकेंगे



माह की शुरुआत में बनाएं बजट

सैलरी आने के बाद बिना योजना के खर्च शुरू करना बजट बिगड़ने का सबसे आसान तरीका है। इसलिए महीने की शुरुआत में ही जरूरी खर्चों की सूची बनाएं। सबसे पहले किराया, ईंधन, बिजली-पानी, राशन, स्कूल फीस, बीमा प्रीमियम और दूसरी अनिवार्य जरूरतों के लिए रकम अलग करें। इसके बाद यात्रा, खरीदारी, मनोरंजन और बाहर खाने जैसे खर्चों के लिए सीमा तय करें। बजट का मतलब हर खर्च रोकना नहीं है। इसका उद्देश्य यह तय करना है कि किस मद में कितना पैसा खर्च किया जा सकता है। यदि महीने की शुरुआत में ही 50,000 की आय में से 25,000 जरूरी खर्चों के लिए निर्धारित हैं और 10,000 रुपये बचत या निवेश के लिए अलग कर दिए गए हैं, तो बाकी 15,000 ही वैकल्पिक खर्चों के लिए उपलब्ध होंगे। इससे महीने के बीच में पैसा खत्म होने की संभावना कम होगी।

छोटे खर्चों को नजरअंदाज न करें

बजट अक्सर किसी एक बड़े खर्च से नहीं, बल्कि कई छोटे खर्चों से बिगड़ता है। रोज की कॉफी, ऑनलाइन खाना, कैश, छोटी-मोटी खरीदारी, मनोरंजन और ऐसे डिजिटल सब्सक्रिप्शन जिनका इस्तेमाल बहुत कम होता है इनकी कुल रकम महीने के अंत में काफी बड़ी हो सकती है। इसलिए कम से कम एक महीने तक हर खर्च लिखने की आदत डालें। मोबाइल के नोट्स, डायरी या किसी खर्च ट्रैकिंग ऐप का इस्तेमाल किया जा सकता है। महीने के अंत में खर्चों को तीन हिस्सों में बांटे। जरूरी, उपयोगी और गैर-जरूरी। इसके बाद देखें कि किन खर्चों को कम किया जा सकता है। मान लीजिए रोजाना 100 का छोटा खर्च हो रहा है। महीने में यह करीब 3,000 और सालभर में करीब 36,500 हो सकता है।

इमरजेंसी फंड को प्राथमिकता

बजट और बचत के साथ आपातकालीन कोष यानी इमरजेंसी फंड भी जरूरी है। अचानक नौकरी में रुकावट, घर से जुड़ी जरूरत, वाहन की मरम्मत या कोई अप्रत्याशित खर्च आने पर अगर अलग पैसा नहीं है तो व्यक्ति को निवेश तोड़ना पड़ सकता है या क्रेडिट कार्ड और कर्ज पर निर्भर होना पड़ सकता है। इमरजेंसी फंड का उद्देश्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि जरूरत के समय पैसा उपलब्ध रखना है। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से निकाली जा सके।

निवेश को आदत बनाएं

सिर्फ पैसा बचाकर रखना पर्याप्त नहीं है। लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए बचत के साथ निवेश भी जरूरी हो सकता है। निवेश का विकल्प चुनते समय लक्ष्य, अवधि और जोखिम क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। नियमित निवेश के लिए एसआईपी एक तरीका हो सकता है। इसमें हर महीने एक तय रकम न्यूउअल फंड योजना में निवेश की जाती है। हालांकि, न्यूउअल फंड बाजार जोखिम के अधीन होते हैं और रिटर्न की गारंटी नहीं होती।



सैलरी का आसान बंटवारा करें

- **जरूरी खर्च**: घर, राशन, बिजली, ईंधनआई और दूसरी अनिवार्य जरूरतें।
- **बचत**: भविष्य की जरूरतों और बड़े खर्चों के लिए।
- **निवेश**: लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए।
- **वैकल्पिक खर्च**: घूमना, मनोरंजन, खरीदारी और दूसरी इच्छाओं पर खर्च।
- इस बंटवारे को अपनी वास्तविक आय और जिम्मेदारियों के अनुसार बदला जा सकता है।

क्रेडिट कार्ड और ईएमआई पर भी रखें नजर

अगर हर महीने सैलरी का बड़ा हिस्सा पुरानी ईएमआई या क्रेडिट कार्ड भुगतान में चला जाता है तो बचत और निवेश के लिए रकम निकालना मुश्किल होगा। इसलिए नए कर्ज लेने से पहले यह देखना जरूरी है कि उसकी मासिक किस्त बजट पर कितना दबाव डालेगी। क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल सुविधा के लिए किया जा सकता है, लेकिन ऐसा खर्च नहीं करना चाहिए जिसे समय पर चुकाना मुश्किल हो। ब्याज और लेट फीस जैसी लागत छोटे खर्च को भी महंगा बना सकती है।

सिर्फ हर महीने निवेश करना काफी नहीं, सही फंड का चयन और लंबी अवधि तक अनुशासन भी जरूरी

एसआईपी से उम्मीद के मुताबिक नहीं बन रहा पैसा, तो कुछ गलतियों से बचें

सुझाव

बिजनेस डेस्क

व्यवस्थित निवेश योजना यानी एसआईपी आज छोटे और बड़े निवेशकों के बीच लंबी अवधि में संपत्ति बनाने का लोकप्रिय माध्यम बन चुकी है। हर महीने तय राशि निवेश करने की सुविधा के कारण नौकरीपेशा और सीमित आय वाले लोग भी धीरे-धीरे बड़ा कोष तैयार करने की उम्मीद रखते हैं। लेकिन कई निवेशकों की शिकायत रहती है कि वर्षों तक एसआईपी चलाते के बाद भी पैसा उनकी उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़ रहा। ऐसे में वे अक्सर फंड, बाजार या फंड प्रबंधक को जिम्मेदार मान लेते हैं। अक्सर में एसआईपी कोई ऐसा निवेश उत्पाद नहीं है, जो निश्चित या गारंटीशुदा रिटर्न देता हो। यह केवल नियमित अंतराल पर निवेश करने का तरीका है। निवेश का अंतिम परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि हर महीने कितनी राशि लगाई जा रही है, किस प्रकार के न्यूउअल फंड का चयन किया गया है, निवेश का लक्ष्य और अवधि क्या है, बाजार की स्थिति कैसी है और निवेशक किसने समझ तक लगातार निवेश बनाए रखा है। यदि एसआईपी उम्मीद के मुताबिक नतीजे नहीं दे रही है तो बाहर निकलने से पहले निवेशक को अपनी रणनीति की इन पांच महत्वपूर्ण कमियों की जांच करनी चाहिए।

लक्ष्य के मुकाबले बहुत कम

है एसआईपी की राशि

एसआईपी में सबसे आम गलती यह होती है कि निवेशक पहले यह तय करता है कि वह हर महीने कितनी रकम आसानी से बचा सकता है, लेकिन यह नहीं देखता कि उसके वित्तीय लक्ष्य को हासिल करने के लिए वास्तव में कितने महीने की जरूरत हैं। 2,000 या 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी निवेश की अच्छी शुरुआत हो सकती है, लेकिन हर लक्ष्य के लिए यह रकम पर्याप्त नहीं होती। मसलन, यदि कोई व्यक्ति पांच साल में 50 लाख या एक करोड़ रुपये का कोष बनाना चाहता है, तो केवल 5,000 रुपये मासिक निवेश से लक्ष्य तक पहुंचना संभव नहीं होगा। इसलिए निवेश की शुरुआत करते समय सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए कि हर महीने कितना निवेश कर सकता हूँ, बल्कि यह होना चाहिए कि अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कितना निवेश करना जरूरी है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि कोई निवेशक पांच साल तक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मान लिया जाए, तो उसके पास करीब 4.1 लाख रुपये का कोष बन सकता है। यदि उसका लक्ष्य पांच लाख रुपये है तो वह लगभग 90 हजार रुपये पीछे रह जाएगा। इसी अनुमान रिटर्न और औसत में पांच लाख रुपये के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए करीब 6,100 रुपये मासिक निवेश की जरूरत पड़ सकती है। आय बढ़ने के साथ एसआईपी की रकम बढ़ाना भी जरूरी है।

लक्ष्य और अवधि के हिसाब

से गलत फंड चुनना

हर न्यूउअल फंड हर निवेशक और हर लक्ष्य के लिए उपयुक्त नहीं होता। फंड चुनते समय केवल ज्यादा रिटर्न देखने के बजाय निवेश की अवधि, लक्ष्य और जोखिम उठाने की क्षमता को प्राथमिकता देनी चाहिए। उदाहरण के लिए, तीन साल बाद घर खरीदने के लिए पैसा जुटा रहे निवेशक और 20 साल बाद सेवानिवृत्ति के लिए निवेश करने वाले व्यक्ति की रणनीति एक जैसी नहीं हो सकती। लंबी अवधि वाले निवेशक अपेक्षाकृत अधिक उतार-चढ़ाव सहन कर सकते हैं, जबकि कम अवधि के लक्ष्य के लिए बहुत अधिक जोखिम वाले इविवर्टी फंड परेशानी पैदा कर सकते हैं। मिड और स्मॉल कैप शेयरों में ज्यादा निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर वृद्धि की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें उतार-चढ़ाव भी काफी अधिक हो सकता है।

पिछले शानदार रिटर्न के पीछे भागना

कई निवेशक ऐसे न्यूउअल फंड चुन लेते हैं, जिन्होंने पिछले एक, तीन या पांच साल में सबसे ज्यादा रिटर्न दिया हो। लेकिन किसी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। आज सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाला फंड आने वाले वर्षों में भी शीर्ष पर रहेगा, यह जरूरी नहीं है। इसी तरह कुछ समय के लिए कमजोर प्रदर्शन करने वाला फंड भी हर स्थिति में खराब निवेश साबित नहीं होता। बाजार के अलग-अलग दौर में विभिन्न फंडों का प्रदर्शन बदल सकता है। निवेशकों को किसी फंड का चयन करते समय यह देखना चाहिए कि उसका प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में कितना स्थिर रहा है।

बाजार को समय देने के बजाय बाजार का समय पकड़ने की कोशिश

एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत नियमित निवेश और अनुशासन है। इसके बावजूद कई निवेशक बाजार बढ़ने पर उत्साह से निवेश करते हैं, लेकिन बाजार गिरे तो एसआईपी रोक देते हैं। उन्हें लगता है कि बाजार और नीचे आने पर दोबारा निवेश शुरू करेंगे। समस्या यह है कि बाजार का सबसे निचला स्तर और सबसे ऊंचा स्तर पहले से तय करना बेहद मुश्किल है। कब बाजार गिरेगा और कब तेजी से ऊपर जाएगा, इसका सटीक अनुमान लगाना आसान नहीं है। नियमित एसआईपी में बाजार की अलग-अलग स्थितियों में निवेश जारी रहता है।

क्या करें निवेशक

यदि आपको एसआईपी उम्मीद के मुताबिक आने नहीं बढ़ रही है तो सबसे पहले घबराकर निवेश बंद करने या फंड बेचने की जरूरत नहीं है। अपनी पूरी निवेश योजना की समीक्षा करें। देखें कि एसआईपी की राशि लक्ष्य के अनुरूप है या नहीं, फंड आपके निवेश अवधि और जोखिम क्षमता के हिसाब से सही है या नहीं और कहीं आप बार-बार बाजार के उतार-चढ़ाव के आधार पर निवेश के फैसले तो नहीं बदल

बहुत जल्दी बड़े रिटर्न की उम्मीद करना

एसआईपी को कुछ लोग जल्दी पैसा बनाने का साधन समझ लेते हैं, जबकि यह मुख्य रूप से लंबी अवधि में अनुशासित निवेश की रणनीति है। शुरुआती वर्षों में कोष की वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी दिखाई दे सकती है, क्योंकि निवेशित राशि अभी बहुत बड़ी नहीं होती। समय के साथ नियमित निवेश जारी रहने पर कुल निवेश राशि बढ़ती है और यदि निवेश को बढ़ने का पर्याप्त समय मिलता है तो चक्रवृद्धि का प्रभाव भी अधिक दिखाई दे सकता है। निवेश से होने वाली संभावित कमाई यदि निवेश में बनी रहती है, तो वह भी आगे रिटर्न पैदा करने में योगदान दे सकती है।

रहे। जरूरत पड़ने पर एसआईपी की रकम बढ़ाई जा सकती है, फंड चयन की समीक्षा की जा सकती है और अलग-अलग निवेश माध्यमों में राशि के बंटवारे पर भी विचार किया जा सकता है। कोई एक ऐसा जादूई फंड नहीं है, जो हर समय सबसे बेहतर रिटर्न दे। बेहतर रणनीति वही है, जो आपके लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुरूप हो और जिसे आप लंबे समय तक अनुशासन के साथ जारी रख सकें।

नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत सदिग्ध मकानों पर छापेमारी पुलिस ने रातभर चलाया ऑपरेशन 6 नशा तस्करों को किया गिरफ्तार

आरोपियों के कब्जे से 25.27 ग्राम स्मैक और 171 ग्राम गांजा बरामद

हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और पुलिस महानिदेशक अजय सिंचल की ओर से नशे और अपराध के खिलाफ अपनाई गई जीरो टॉलरेंस नीति पर अमल करते हुए जिला पुलिस ने नशा तस्करों के खिलाफ कड़ा एक्शन लिया है। एसपी हेमंद कुमार मीणा के मार्गदर्शन और एसपी दीपिका अग्रवाल के नेतृत्व में पुलिस टीम ने शुरुवार रात्रि शहर में कॉबिंग ऑपरेशन चलाया। अभियान में शहर थाना, मॉडल टाउन थाना, रामपुरा थाना और सीआईए रेवाड़ी की संयुक्त टीमों ने सदिग्ध मकानों और ठिकानों पर छापेमारी की। रात भर चले सघन अभियान से नशा माफियाओं में हड़कंप मच गया।



रेवाड़ी। पुलिस टीम को दिशा-निर्देश देते हुए एसपी दीपिका तथा अभियान के दौरान एक मकान में तलाशी लेती पुलिस।



फोटो : हरिभूमि

इन आरोपियों को किया गिरफ्तार

अभियान के तहत पुलिस की अलग-अलग टीमों ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया तथा उनके कब्जे से 25.27 ग्राम अवैध स्मैक और 171 ग्राम गांजा बरामद किया है। थाना शहर व सीआईए रेवाड़ी की संयुक्त टीम ने मोहल्ला खासापुरा निवासी मुकेश कुमार उर्फ मौनू उर्फ फौजीवाला को 5.37 ग्राम अवैध स्मैक, 9 सिल्वर पेपर के साथ व एक मोबाइल फोन, जबकि आनंद नगर निवासी विजय व मोहित को 6.41 ग्राम अवैध स्मैक और 6 सिल्वर पेपर के टुकड़ों के साथ गिरफ्तार किया है। वहीं, थाना रामपुरा व सीआईए रेवाड़ी की संयुक्त टीम ने मोहल्ला कुतुबपुर निवासी रितिक से 6.26 ग्राम अवैध स्मैक तथा मोहल्ला आदर्श नगर निवासी साहिल से 51 ग्राम अवैध गांजा बरामद कर उन्हें हिरासत में लिया। थाना माडल टाउन व सीआईए टीम ने हमपी के जिला पन्ना के गांव पलेहा हाल गांव ढालियावास निवासी एक युवक को 120 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया है। इसके अतिरिक्त, कॉबिंग ऑपरेशन के दौरान चौकी भाड़ावास क्षेत्र से एक अपराधी के घर से 7.23 ग्राम अवैध स्मैक बरामद की गई।

जारी रहेगा अभियान



नशे के खिलाफ जिला पुलिस का यह प्रहार थकेगा नहीं, बल्कि आगे भी लगातार जारी रहेगा। समाज को नशामुक्त बनाना और युवाओं का गतिविधि सुरक्षित करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। नशा तस्कर या तो ये अवैध धंधा छोड़ दे या फिर सख्त कानूनी कार्यवाही के लिए तैयार रहे।
-हेमंद कुमार मीणा, एसपी रेवाड़ी।

डीएलएसए सचिव ने विद्यार्थियों को दी पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों की जानकारी

18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को यौन शोषण, उत्पीड़न से बचाने के लिए है पॉक्सो एक्ट

हरिभूमि न्यूज़ ►► बावल



रेवाड़ी। विद्यार्थियों को पॉक्सो एक्ट की जानकारी देते हुए सीजेएम।

फोटो : हरिभूमि

सार्वजनिक रूप से करना कानूनी अपराध है। इस अधिनियम का उद्देश्य बच्चों को यौन उत्पीड़न, यौन शोषण, यौन दुर्व्यवहार और बाल पोर्नोग्राफी से बचाकर उनकी सुरक्षा करना और उनकी गरिमा को बनाए रखना है। कार्यशाला में सब डिविजनल लीगल सर्विस कमेटी

बावल से पैनल अधिवक्ता प्रीति ने बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों, कर्तव्य तथा नालसा की मुफ्त कानूनी सहायता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से हेलपलाइन नंबर 01274-220062 चलाया हुआ है, जिस पर आमजन

किसी भी प्रकार के कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा उच्चतम न्यायालय के टोल फ्री नंबर 15100 पर कॉल करके फ्री कानूनी सहायता ली जा सकती है। इस अवसर पर स्कूल स्कूल प्राचार्य कमलेश, अध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में चला पौधरोपण अभियान

हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

सेक्टर-18 स्थित प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय में पर्यावरण संरक्षण एवं ओजोन परत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से वनस्पति विज्ञान विभाग की ओर से शनिवार को पौधरोपण अभियान चलाया गया। प्राचार्या डा. ज्योति यादव के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने सहयोग दिया। कार्यक्रम में अंशेजी विभाग से डा. यशपाल, डा. रीना यादव, डा. हरीश, डा. जयश्री, डा. शर्मिला तथा वनस्पति विज्ञान विभाग से डा. योगेश यादव ने पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में डा. इंद्र, पूनम, मीनाक्षी, महिपाल, मनीषा और शीतल सहित बीएससी जीव विज्ञान एवं



रेवाड़ी। कॉलेज परिसर में पौधरोपण करते हुए शिक्षक व छात्राएं।

फोटो : हरिभूमि

एमएससी वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों ने कॉलेज परिसर में अनेक पौधे रोपित किए तथा पर्यावरण संरक्षण और हरित परिसर के निर्माण का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान ओजोन परत के महत्व, पर्यावरण संतुलन तथा प्रकृति संरक्षण

के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी पर भी जागरूकता संदेश दिया गया। शिक्षकों ने कहा कि पौधारोपण अभियान का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना तथा उन्हें प्रकृति संरक्षण के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना था।

रुविमणी एवं श्रीकृष्ण विवाह का किया वर्णन

हरिभूमि न्यूज़ ►► महेंदगढ़

शहर की प्राचीन संस्था श्री रामलीला परिषद के भव्य रंगमंच पर श्री गीता विज्ञान प्रचार समिति की ओर से चल रही सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन तपोभूमि हरिद्वार से पधारें महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज के द्वारा रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह का भावपूर्ण वर्णन किया गया, जिसमें दर्शकों की अच्छी खासी भीड़ देखने को मिली। इस दौरान मास्टर अमरसिंह सोनी के निर्देशन में रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह की मनमोहक झांकियां भी पेश की गईं

तथा महिलाओं ने विवाह के मंगल गीत गाए और बधाईयां बांटी गईं। कार्यक्रम के यजमान रामप्रकाश शर्मा एवं ममता शर्मा सपरिवार थे, जबकि प्रसाद की व्यवस्था जयप्रकाश मिश्रा की ओर से करवाई गई। पूजन का कार्य आचार्य विनोद तिवाड़ी द्वारा विधिवत करवाया गया। रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण विवाह का वर्णन करते हुए गुरुजी ने बताया कि विदम्ब के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मणी श्रीकृष्ण से बहुत प्रेम करती थी, किंतु उसका भाई रुक्मी श्रीकृष्ण से ईर्ष्या करता था। इसलिए उसने अपनी बहन का रिश्ता कृष्ण के शत्रु राजा शिशुपाल से तय कर दिया। रुक्मणी

को जब इस बात का पता लगा तो उसने श्रीकृष्ण के पास पत्र भेजकर विवाह से पहले देवी पूजन के समय मंदिर से ही हरण करके साथ ले जाने की प्रार्थना की। संदेश पाकर श्रीकृष्ण अपना रथ लेकर वहां पहुंचे और रुक्मिणी का हरण करके द्वारका ले गए और वहां पर विधिवत दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। इस दौरान श्री गीता विज्ञान प्रचार समिति के सभी सदस्यों के साथ-साथ श्री राम प्रचार मंडल एवं श्री श्याम सेवक मंडल के सभी सदस्यों व पदाधिकारियों ने व्यासपीठ पर गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर सैकड़ों स्त्री, पुरुष और बच्चे भी मौजूद रहे।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय टहना दीपालपुर को मिला नया भवन

हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

गांव टहना दीपालपुर स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय को नया भवन की सौगात मिली है। सरकार की ओर से पुराने विद्यालय भवन को कंडम घोषित किए जाने के बाद उसे ध्वस्त कर किया गया था। ग्राम पंचायत के प्रयासों से विद्यालय को अब एक नवनिर्मित भवन उपलब्ध कराया गया है।

नई बिल्डिंग में विद्यालय का विधिवत स्थानांतरण किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में सुख-समृद्धि, शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा की कामना के साथ वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच हवन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला पार्षद सरोज मेहरा ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की, जबकि समाजसेवी धनीराम मेहरा



रेवाड़ी। स्कूल में नए भवन का उद्घाटन करते हुए सरोज मेहरा। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर दराराम आर्य जिला प्रमारी पतंजलि योग समिति, मास्टर जितेंद्र, अशोक कुमार, श्रीराम, गुलशन, सुभाष, अरविंद, विजय सिंह, श्रीप्रकाश, ग्राम सेक्टर-18 मनीष कुमार व पंच सुभाष सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अतिथियों, शिक्षकों एवं ग्रामीणों ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की कामना की। मुख्य अतिथि जिला पार्षद सरोज मेहरा ने विद्यालय के नए भवन का विधिवत उद्घाटन

किया। इस अवसर पर उन्होंने विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर स्वच्छ, स्वस्थ एवं शुद्ध पर्यावरण का संदेश दिया। मेहरा ने अपने अनुदान से कोष से 5 लाख देने की घोषणा की।

सुविधा

यात्रियों की अधिक संख्या को देखते हुए रेलवे ने की विशेष व्यवस्था

रींगस जाने वाले लोगों को राहत, रेवाड़ी से दो दिन चलेगी अनारक्षित स्पेशल ट्रेन

हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

रींगस स्थित धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए रेलवे ने विशेष व्यवस्था की है। अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए रेवाड़ी-रींगस-रेवाड़ी अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा का संचालन किया जा रहा है। यह स्पेशल ट्रेन 21 और 22 सितंबर को दो फेरे लगाएगी, जिससे यात्रियों को इन दिनों आवागमन के लिए अतिरिक्त रेल सुविधा मिल सकेगी। उत्तर पश्चिम रेलवे के सीपीआरओ अमित सुदर्शन ने बताया कि गाड़ी संख्या 09717 रेवाड़ी-रींगस अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा 21 व 22 सितंबर को रेवाड़ी



से सुबह 10:30 बजे रवाना होकर दोपहर 2 बजे रींगस पहुंचेगी। वापसी में गाड़ी संख्या 09718 रींगस-रेवाड़ी अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा रविवार दोनो दिनों में रींगस से दोपहर 2:55 बजे रवाना होकर शाम 6:40 बजे रेवाड़ी पहुंचेगी।

से सुबह 10:30 बजे रवाना होकर दोपहर 2 बजे रींगस पहुंचेगी। वापसी में गाड़ी संख्या 09718 रींगस-रेवाड़ी अनारक्षित स्पेशल रेलसेवा रविवार दोनो दिनों में रींगस से दोपहर 2:55 बजे रवाना होकर शाम 6:40 बजे रेवाड़ी पहुंचेगी।

अनारक्षित स्पेशल ट्रेन में होंगे 15 डिब्बे

यात्रियों की अधिक संख्या को देखते हुए यह रेलसेवा कुल 15 डिब्बों के साथ संचालित होगी, जिसमें 13 साधारण श्रेणी के डिब्बे और 2 गाड़ डिब्बे शामिल होंगे। अनारक्षित श्रेणी की इस विशेष ट्रेन से यात्री बिना आरक्षण के यात्रा कर सकेंगे। रेलवे की इस अतिरिक्त व्यवस्था से रेवाड़ी, नारनौल, नीमकाथाना, श्रीग्राधोपुर सहित मार्ग के विभिन्न क्षेत्रों से रींगस आने-जाने वाले यात्रियों को इन दो दिनों में आवागमन का एक अतिरिक्त विकल्प उपलब्ध होगा।



रेवाड़ी। प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते हुए।

फोटो : हरिभूमि

अंतरसदनीय हिंदी कथा वाचन, वक्तृत्व व काव्य पाठ में रेजांगला सदन विजेता

हिंदी में अभिव्यक्ति राष्ट्रीय एकता और गौरव की बात : प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर

हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

गांव गोठड़ा अहीर स्थित सैनिक स्कूल में कनिष्ठतम समूह 'स' की अंतरसदनीय हिंदी कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन कारगिल व रेजांगला सदन के बीच किया गया। सभी वरिष्ठ सदनों के विभाजन अनुरूप कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ के लिए जीवन के विभिन्न आयामों से संबंधित अलग-अलग विषय रखे गए। नवागंतुक कक्षा के 18 कैडेट्स ने अपनी प्रस्तुतियां दी। विद्यालय प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की तथा प्रशासनिक अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल जय सिंह राठौड़, उप-प्राचार्या स्ववाइन लीडर वंदना

प्रतियोगिताओं के समग्र परिणाम के आधार पर रेजांगला सदन विजेता व कारगिल सदन उपविजेता रहा।

इस मौके पर प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने कहा कि हिंदी में अभिव्यक्ति राष्ट्रीय एकता और गौरव की बात है। हिंदी संवाद की भाषा है जो हम सब को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बदलते वैश्विक परिवेश में प्रगति करने के लिए अन्य भाषाएं सीखनी आवश्यक है, परंतु स्वभाषा में अभिव्यक्ति गौरव की बात है। उन्होंने हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को पुस्तकें व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम छात्र प्रभारी कैडेट कपिल थो मंच संचालन कैडेट दीपेंद्र व कैडेट देवराज बघेल ने किया। प्रतियोगिता समग्र प्रभारी योगेश कुमार सिंचल टीजीटी हिंदी थे।

एडीसी ने रुध, हरचंदपुर व लोधाना में विशेष ग्राम सभाओं का लिया जायजा



हरिभूमि न्यूज़ ►► रेवाड़ी

एडीसी राहुल मोदी ने कहा कि ग्राम सभाओं में पात्र परिवारों का सही डाटा वेरिफाई करने के लिए ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन किया जा रहा है ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे। ग्राम सभाओं के माध्यम से परिवार पहचान पत्र से संबंधित विभिन्न प्रकार की वेरिफिकेशन का कार्य पंचायत स्तर पर किया जा रहा है।

एडीसी ने शनिवार को बावल खंड के गांव रूध, हरचंदपुर और धारूहेड़ा खंड के गांव लोधाना में आयोजित विशेष ग्राम सभाओं का जायजा लिया। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परिवार पहचान पत्र से संबंधित वेरिफिकेशन का यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी गंभीरता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए वेरिफिकेशन कार्य को निर्धारित समय में पूरा करें।

एसआईआर अभियान के तहत 30 तक दर्ज होंगे दावे एवं आपत्तियां रेवाड़ी।

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के तहत दावे एवं आपत्तियां दर्ज करने का कार्य 30 सितंबर तक किया जाएगा। डीसी ने मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि निर्धारित समय में मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदाता सूची में ना म, वि व र ण आदि से संबंधित दावे एवं आपत्तियां प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि दावे एवं आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर तक किया जाएगा तथा मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन अब 6 नवंबर को होगा। डीसी ने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत 26 व 27 सितंबर (शनिवार व रविवार) विशेष अभियान दिवस निर्धारित किया गया है। इन विशेष अभियान दिवसों पर भी सभी बीएलओ अपने-अपने मतदान केंद्रों पर उपस्थित रहकर मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के लिए फार्म तथा मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करेंगे। डीसी ने सभी बीएलओ को विशेष अभियान दिवस के दौरान अपने मतदान केंद्रों पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि विशेष अभियान दिवसों पर यदि कोई बीएलओ अनुपस्थित पाया जाता है तो उसके विरुद्ध निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।



स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने कहा विकास कार्यों से ग्रामीणों को मिलेगी बेहतर सुविधा

ग्रामीणों को मिली अनेक विकास कार्यों की सौगात

काकोड़िया में उप स्वास्थ्य केंद्र की रखी आधारशिला

गांव में पहुंचने पर क्षेत्र की पंचायतों और ग्रामीणों ने स्वास्थ्य मंत्री का अभिनंदन किया

■ स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना बेहद आवश्यक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

प्रदेश की स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं आयुष मंत्री आरती राव ने शनिवार को क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों को विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी। गांव काकोड़िया में आयोजित जनसभा कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री ने जिला परिषद स्कीम के तहत लाखों रुपये की लागत से पूर्ण हुए विकास कार्यों के उद्घाटन किए तथा गांव में 55



रेवाड़ी। काकोड़िया में विकास कार्यों का उद्घाटन करते हुए तथा जनसभा में लोगों को संबोधित करते हुए आरती राव।



फोटो : हरिभूमि

इन विकास कार्यों का किया गया उद्घाटन

स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने 45 लाख रुपये से अधिक की लागत से पूर्ण किए गए विभिन्न विकास कार्यों के उद्घाटन किए। इनमें गांव मुदुलिया में दूधित पानी की निकासी के लिए पाइपलाइन, गांव लिसाना में देवता वाले जोड़ड़ की चारदीवारी, गांव गंगाथवा जाट में श्मशान घाट की चारदीवारी तथा फिरजी में दूधित पानी की निकासी के लिए पाइपलाइन का कार्य शामिल है। इसके साथ ही गांव काकोड़िया में शिव मंदिर के पास बनाए गए टीन शेड तथा वार्मिकी चौपाल का भी उद्घाटन किया। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। गांवों में मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने के लिए लगातार विकास कार्य कराए जा रहे हैं, ताकि ग्रामीणों को बेहतर सुविधाएं अपने ही क्षेत्र में उपलब्ध हो सकें। उन्होंने कहा कि जल निकासी जैसी मूलभूत व्यवस्था मजबूत होने से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को सुविधा मिलेगी और सार्वजनिक स्थलों से जुड़ी आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सकेगा। इन कार्यों से ग्रामीणों को सुविधाएं उपलब्ध होने के साथ-साथ गांवों में आहारभूत ढांचे को भी मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना बेहद आवश्यक है। नया भवन तैयार होने के बाद क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ स्थानीय स्तर पर मिलेगा। इससे ग्रामीणों को सामान्य स्वास्थ्य सेवाओं के लिए दूर जाने की आवश्यकता कम होगी और स्वास्थ्य सुविधाओं के बुनियादी ढांचे को मजबूती मिलेगी।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जिला परिषद चेरमेन मनोज यादव, नगर परिषद रेवाड़ी चेरमेनसैन किर्नाती पीपल, नगर पालिका धारुहेड़ा चेरमेन अजय जांगड़ा, अनिल रायपुर, सुनील मूसेपुर, चेरमेन अजय पाटीदा, दलबीर, रविंद यादव, महेश यादव, जिला पाषंद सरोज मेहरा, धीरज यादव, रामसिंह, उमेश यादव, विजयपाल और विदेशे सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

सुविधाओं का विस्तार

मंत्री आरती राव ने कहा कि सरकार विकास कार्यों को केवल शहरों तक सीमित रखने के बजाय ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवश्यकतानुसार सुविधाओं का विस्तार कर रही है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों की मांगों और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विकास कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने ग्रामीणों से भी विकास कार्यों में सहयोग करने का आह्वान किया।

अंतरराष्ट्रीय सर्पदंश दिवस के अवसर पर लोगों को किया जागरूक

बावल। स्वास्थ्य विभाग की ओर से शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बावल में अंतरराष्ट्रीय सर्पदंश जागरूकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य कर्मियों ने आमजन को सर्पदंश से बचाव तथा सांप के काटने की स्थिति में



अनुप्राण जाने वाले आवश्यक उपायों के बारे में जागरूक किया। डा. रामनिवास और डा. गरिमा ने कहा कि सांप के काटने की स्थिति में घबराने के बजाय पीड़ित को शांत रखते हुए उसे तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल पहुंचाए तथा प्रभावित अंग को स्थिर रखें। उन्होंने बताया कि सर्पदंश की स्थिति में कसकर बांधना, घाव को काटना या घूमना, झाड़ू-फूंक अथवा धरलू उपचार न करें। सांप को पकड़ने या मारने का प्रयास भी नहीं करें। उन्होंने बताया कि सर्पदंश से बचाव के लिए घर एवं आसपास साफ-सफाई रखने, जंगल, खेत या घास वाले क्षेत्रों में जाते समय जूते पहनने, रात के समय टॉप का प्रयोग करने तथा झाड़ुओं और घास की नियमित सफाई रखने सहित सावधानियां बरतने की सलाह दी। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि सर्पदंश की स्थिति में समय पर चिकित्सकीय उपचार जीवन बचाने में महत्वपूर्ण है। इसलिए किसी भी प्रकार के धरलू उपचार में समय न गंवाते हुए तुरंत स्वास्थ्य केंद्र पहुंचें।

चित्रकला के वरिष्ठ वर्ग में वीरेंद्र और कनिष्ठ में फरहान व वंशिका बनी विजेता



कोसली। बाबू बालमुकुंद गुप्त राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गुड़ियाजी में हिंदी साहित्य के रचनाकार बाबू बालमुकुंद गुप्त की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य विद्याभाषण गुप्ता ने बाबू बालमुकुंद गुप्त के जीवन, उनकी रचनाओं और हिंदी साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम में उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर भाषण, कविता पाठ, निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें नौवीं से बारहवीं के वर्ग में मनोषा ने प्रथम और निधि ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। छठी से आठवीं कक्षा के

वर्ग में नैसी ने प्रथम और इशिता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कविता पाठ उद्योति ने प्रथम और मनोषा ने द्वितीय, कनिष्ठ वर्ग में दिव्या ने प्रथम व यशिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निबंध लेखन के वरिष्ठ वर्ग में हर्दू ने प्रथम व दीक्षा ने द्वितीय, कनिष्ठ वर्ग में रिद्धि ने प्रथम व प्रज्ञा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। चित्रकला प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में वीरेंद्र ने पहला और अनमोल ने दूसरा स्थान हासिल किया। कनिष्ठ वर्ग की चित्रकला प्रतियोगिता में फरहान और वंशिका ने प्रथम स्थान तथा तनिष व फैज ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य ने सभी विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया। इस मौके पर सभी शिक्षक मौजूद थे।

तलवारबाजी के लिए 24 को ट्रायल

रेवाड़ी। खेल विभाग की ओर से जिले में 25 खिलाड़ियों की आवासीय तलवारबाजी खेल अकादमी संचालित की जा रही है। अकादमी के लिए खिलाड़ियों के चयन के लिए ट्रायल 24 सितंबर को शाम 3 बजे से राव तुलाराम स्टेडियम में आयोजित किए जाएंगे। जिला खेल अधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि ट्रायल में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की आयु 12 से 19 वर्ष के बीच होनी चाहिए। चयन प्रक्रिया में खिलाड़ियों का चयन फिटनेस टेस्ट के माध्यम से किया जाएगा। मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक अथवा प्रतिभागिता करने वाले तथा राज्य एवं जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों सहित तलवारबाजी खेल के उत्कृष्ट खिलाड़ियों को चयन प्रक्रिया में प्राथमिकता के आधार पर शामिल किया जाएगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाएं उपलब्ध कराने में सीएसआर एक अहम भूमिका निभा रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार आमजन की तमाम समस्याओं के समाधान को लेकर कृतसंकल्प है। ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाएं उपलब्ध कराने में सीएसआर एक अहम भूमिका निभा रही है। औद्योगिक क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य संगठनों को भी इस मुहिम में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए आगे आना चाहिए। विधायक शनिवार को जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन के सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के अंतर्गत हेल्पएज इंडिया के सहयोग से गांव गोकलगढ़ में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर में लोगों को संबोधित कर रहे थे। शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों ने हड्डी रोग, त्वचा रोग, नेत्र रोग, मेडिसिन एवं ईएनटी सहित 271 से अधिक रोगियों के स्वास्थ्य जांच की। इस दौरान जेएसडब्ल्यू स्टील कंपनी के प्लांट हेड प्रदीप माहेश्वरी एवं परम सिंह चौहान सहित सामाजिक कार्यकर्ता सतीश मस्तान व मुकेश कुमार उपस्थित रहे। शिविर के आयोजन में सरपंच राजबीर यादव, पंच परमानंद भगत, प्रकाश सैन, रवि प्रधान, राजेंद्र सिंह एवं होशियार सिंह सहित ग्रामीणों का सहयोग रहा। हेल्पएज इंडिया की ओर से डा. अतर सिंह दहिया एवं एसपीओ अभिषेक शर्मा की टीम ने शिविर के संचालन में भूमिका निभाई।



अलवर स्टेशन यार्ड में फुट ओवरब्रिज पर तकनीकी कार्य के कारण रेल सेवाएं प्रभावित

रेवाड़ी। उत्तर पश्चिम रेलवे की ओर से अलवर स्टेशन यार्ड में फुट ओवरब्रिज पर तकनीकी कार्य के लिए ब्लॉक लिया जा रहा है। कार्य के कारण रेलसेवाएं प्रभावित रहेंगी। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित सुदर्शन ने बताया कि रेलसेवाएं आंशिक रद्द व रेगुलेट रहेंगी। गाड़ी संख्या 59630 फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा 22 सितंबर को फुलेरा से प्रस्थान करके बांदीकुई तक ही संचालित होगी। यह रेलसेवा बांदीकुई-रेवाड़ी के मध्य आंशिक रद्द रहेगी। गाड़ी संख्या 59629 रेवाड़ी-फुलेरा रेलसेवा 22 सितंबर को रेवाड़ी के स्थान पर बांदीकुई से संचालित होगी। यह ट्रेन रेवाड़ी-बांदीकुई के मध्य आंशिक रद्द रहेगी। वहीं गाड़ी संख्या 12404 लालगढ़-प्रयागराज रेलसेवा 22 सितंबर को लालगढ़ से प्रस्थान करके मार्ग में 30 मिनट रेगुलेट रहेगी। गाड़ी संख्या 19602 न्यू जलपाईगुड़ी-उदयपुर सिटी रेलसेवा 21 सितंबर को न्यू जलपाईगुड़ी से प्रस्थान करके मार्ग में एक घंटा 20 मिनट रेगुलेट रहेगी। गाड़ी संख्या 14726 मथुरा-मिनावी रेलसेवा 22 सितंबर को मथुरा से प्रस्थान करके अलवर बाईपास लाइन होकर संचालित होगी। यह रेलसेवा अलवर स्टेशन पर ठहराव नहीं करेगी।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

रेवाड़ी कार्यालय : द्वापर नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला रुक्मा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

आरोप



हरिभूमि न्यूज ▶▶ धारुहेड़ा

कस्बे के नंदरामपुर बास तथा दिल्ली व सोहना रोड के नाले की डेढ़ साल से सफाई नहीं हुई है। बरसाती नाले कीचड़ व गंदगी से सरोबार है। कस्बे के लोगों का आरोप है कि नाले साफ किए बिना जेई ने ठेकेदार से 12

बरसाती नाले कीचड़ व गंदगी से सरोबार

नालों की सफाई पर फिर उठे सुवाल

लोगों ने की जांच कराने की मांग

सोहना, दिल्ली व बास रोड के नालों की डेढ़ साल से नहीं हुई सफाई

पार्षदों सहित लोगों ने ठेकेदार की पेमेंट रोकने की दी शिकायत

लाख रुपये का बिल ले लिया है। मामले को लेकर कस्बावासियों ने नगर पालिका चेरमेन से पार्षदों को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद कस्बे के पार्षदों सहित दो दर्जन से अधिक लोगों ने ठेकेदार की रोकने के लिए नया सचिव, निदेशक, डीएमसी व मंत्री विपुल गोयल का शिकायत दी है। लोगों ने नालों की फिजीकल सत्यापन कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि बिना नालों की सफाई के बिल पास करने की प्रक्रिया भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि नया न बिना नालों की सफाई के कागजों में

कितनी बार बिल पास किए हैं, इसकी भी जांच होनी चाहिए। प्रशासन को मामले को लेकर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। लोगों का आरोप है कि कस्बे के मौहल्लों के नाले, नालियों, सीवरों व पानी निकासी मार्गों की कागजों में सफाई दिखाई जा रही है, जबकि मौके पर नाले गंदगी से अटे पड़े हैं। उन्होंने कहा कि नागरिकों में सफाई के लिए जागरूकता लाना तो ठीक है, लेकिन सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ किए बिना यह संभव नहीं है। जब तक प्रशासन स्थाई समाधान नहीं करेगा, तब तक शहर न तो स्वच्छ

रह सकता है और न ही नागरिकों को गंदगी से स्थाई मुक्ति मिल सकती है। नया में लगे 87 सफाई कर्मचारियों की संख्या केवल कारगजों में ही नजर आ रही है, जबकि धरातल पर सफाई तक नहीं की जा रही है। पिछले दिनों नगरपालिका हाउस बैठक में प्रत्येक वार्ड में 4-4 सफाई कर्मी लगाने व उनके फोन नंबर हर गली में लिखवाने की बात की गई, लेकिन अभी तक इस ओर कोई कदम तक नहीं उठाया गया। जब लोग प्रोपर्टी टैक्स दे रहे हैं तो उनको सभी सुविधाएं भी मिलनी ही चाहिए।



कबड़ी में सोंगल कैथल की टीम विजेता

रेवाड़ी। क्षेत्र के गांव बेहका में स्थित बाबा जिंदा देव आश्रम में मेले व मंडारे का आयोजन किया गया। मेले में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें खिलाड़ियों ने अपने जोहर दिखाए। कबड़ी में सोंगल कैथल की टीम ने प्रथम स्थान हासिल कर 41000 रुपये की राशि जीता, वहीं द्वितीय स्थान पर रही सोनवान मिवाली की टीम को 31 हजार रुपये व ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। मंदिर के महाराज राजेश पुरी व मेला कमेटी के सदस्यों ने विजेताओं को पुरस्कार दिया। इससे पहले रात्रि की आश्रम में कर्मवीर धारण व राकेश किलाई एंड पार्टी के कलाकारों की ओर से हरियाणवी संस्कृति की रागनियां पेश की गईं। कबड़ी प्रतियोगिता में बेस्ट रेडर और बेस्ट कैचर खिलाड़ियों को भी ट्राफी और पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर मेला कमेटी प्रधान राकेश सिहाग, धर्मपाल डीपीई, प्रवीण सिहाग, नरेंद्र फौजी, धर्मेद थानेदार, चरण सिंह एचपी, काली, मदन झाँवर व मंजीत सिहाग सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।



प्रतियोगिताओं के विजेता हुए सम्मानित

रेवाड़ी। जिले के गांव सोहा स्थित सीएम ईईई राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सेवा संकल्प अभियान की प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। प्राचार्य सत्यवीर नाहड़िया की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में जिला प्रशासन की ओर से अभियान के नोडल अधिकारी गांव के पूर्व पंच सुदेश ने विजेताओं को पुरस्कार किया। गत 17 सितंबर को पेंटिंग व रंगोली तथा शनिवार को भाषण प्रतियोगिता में विद्यालय के करीब तीन दर्जन विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में दक्ष, यक्षरा, मौनक्षी, देविका, सोनली, हर्षिता, चंचल, काजल, महेश, पवन, निशित, निधि, ध्रुव, प्रिया, पूनम, कविता, बबिता व मुरकान को पुरस्कार दिया गया। प्राध्यापिका सोमा, श्याम लाल गुप्ता, शशि कपूर, प्रियंका, लक्ष्मी यादव तथा रेखा ने प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई।



लंपी रोग से ग्रसित बेसहारा गाय का किया उपचार

कुंड। कुंड क्षेत्र में गोसेवा की भावना को आगे बढ़ाते हुए गो सेवक लंपी रोग से ग्रसित बेसहारा गायों का उपचार कर रहे हैं। शनिवार को गोरक्षक नीरज यादव ढाणी शोभा की अशुवाई में गोसेवकों ने लंपी रोग से पीड़ित गाय का उपचार कराया। युवाओं ने कहा कि घायल एवं बीमार पशुओं की समय पर मदद करना समाज की जिम्मेदारी है। उन्होंने लोगों से भी अपील करते हुए कहा कि वे घायल या बीमार गोवंश की सूचना गोसेवकों अथवा संबंधित पशु चिकित्सा विभाग को दें। नीरज यादव ने कहा कि गोसेवा केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि मानवता और संवेदना का कार्य है। इस मौके पर टीम मोनू मानेसर के जतिन मनेठी, राहुल, शुभम मनेठी, परवीन मनेठी, धर्मेद, रोहित, आकाश व अजय मौजूद रहे।



विद्यार्थियों ने चित्रकला व भाषण में दिखाई प्रतिभा

रेवाड़ी। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल पुलिस लाइन दिल्ली रोड में मेरे सपनों का भारत विषय पर चित्रकला एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने रंगों और रचनात्मक कल्पनाओं के माध्यम से अपने सपनों के भारत की सुंदर एवं प्रेरणादायक चरित्र प्रस्तुत की। वहीं भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त किए तथा देश के उज्ज्वल भविष्य को लेकर अपनी कल्पनाओं और उपेक्षाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। शिक्षकों ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को पहचानने, विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने तथा जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया।



विद्यार्थियों ने भाषण प्रतियोगिता में प्रभावी एवं तार्किक ढंग से रखे विचार

रेवाड़ी। सेवा संकल्प अभियान के तहत जिले के सभी विद्यालयों में शनिवार को विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने विचारों को प्रभावी, स्पष्ट एवं तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान करना रहा। विभिन्न विद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिला शिक्षा अधिकारी राजेंद्र शर्मा ने कहा कि भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल तथा तार्किक सोच को विकसित करने का प्रयास किया गया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों के भाषण, विषय की समझ, विचारों की स्पष्टता, तार्किक प्रस्तुति, भाषा एवं आत्मविश्वास सहित विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया गया। विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट दर्शन करने वाले विद्यार्थियों का चयन आगामी खंड स्तरीय भाषण प्रतियोगिता के लिए किया जाएगा। डीईओ ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ इस प्रकार की सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन भी आवश्यक है।

गुलाब सिंह की स्मृति में 23 को लगेगा मेला

रेवाड़ी। शहीद नायक गुलाब सिंह वीर चक्र की स्मृति में 23 सितंबर को गांव मनेठी में मेले एवं खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। आयोजन उप-तहसील मनेठी के पास स्थित शहीद गुलाब सिंह खेल परिसर में आयोजित होगा। आयोजकों ने बताया कि मेले में 65 किलोग्राम भार वर्ग की कबड्डी, पुरुष व महिला वालीबॉल, एथलेटिक्स तथा लड़के-लड़कियों की अंडर-14 वॉड प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। कबड्डी प्रतियोगिता सुबह 11 बजे तथा सभी एथलेटिक्स प्रतियोगिताएं सुबह 7:30 बजे से शुरू होंगी। प्रतियोगिताओं में विजेता खिलाड़ियों को आकर्षक नकद पुरस्कार दिए जाएंगे। शरद्वती देवी धर्मपाली शहीद गुलाब सिंह की ओर से सुबह 9 बजे ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। कार्यक्रम में महामंडलेकर सेवोश्वर दास महाराज, डा. संजय मेहरा, नरेंद्र यादव, खेल ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विजय बैरियर, समाजसेवी कृष्ण यादव और शहीद के पुत्र सुरेश यादव सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहेंगे।



स्लीपकेशन घुमक्कड़ी के साथ मिलेगी भरपूर आराम वाली नींद

आज की भाग-दौड़ मरी जीवनशैली में अधिकतर लोगों को सुकून और चैन मरी नींद की कमी अकसर महसूस होती है। इस कमी को पूरा करने में स्लीपकेशन का ट्रेंड बहुत कारगर साबित होता है। जहां घूमने के साथ ही भरपूर आराम का भी मौका मिलता है। स्लीपकेशन क्या है, इसका ट्रेंड क्यों बढ़ रहा है, आप भी जानना चाहेंगे।

दिल की बीमारी और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के बोझ को और बढ़ा रही है।

इसलिए बढ़ रहा स्लीपकेशन का ट्रेंड

यूपस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन जैसे बड़े हेल्थ ग्रुप्स के दिशा-निर्देशों की मानें, तो ज्यादातर स्वस्थ वयस्कों को बेहतर ढंग से काम करने के लिए हर रात 7 से 9 घंटे की नींद की जरूरत होती है। लेकिन ‘लोकल सर्कलस’ का एक सर्वे बताता है कि आज लगभग 10 में से 6 भारतीय वयस्कों को छह घंटे से भी कम की बिना रुकावट वाली नींद मिलती है। करीब 50 फीसदी से अधिक काम-काजी लोग नींद की कमी से जूझ रहे हैं। इससे दिमाग पर बोझ बढ़ रहा है और वे



थका हुआ महसूस करते हैं। इस ‘स्लीप डेब्ट’ को दूर करने के लिए ही स्लीपकेशन पर जाने का चलन बढ़ रहा है।

टूरिज्म सेक्टर का नया बाजार

आज कई बड़े टूरिज्म कॉर्पोरेट्स ने इस नए बाजार को देखते हुए ऋषिकेश, कुर्ग, केरल, धर्मशाला और उदयपुर के कई प्रीमियम वेलनेस रिजॉर्ट्स में इस उभरते सेक्टर के लिए तैयारी करनी शुरू कर दी है। इन रिजॉर्ट्स के कमरों में टीवी या डिजिटल गैजेट्स की मनाही होती है। कमरों में पूरी तरह सन्नाटा और अंधेरा बनाए रखने के लिए विशेष पर्दों का इस्तेमाल किया जाता है। सोने से पहले लेवेंडर एरोमा थैरेपी और विशेष मेलेटोनिन रिच डाइट या हर्बल टी दी जाती है, जो गहरी नींद लाने में मदद करती है। उत्तराखंड के मारचुला में एक रिजॉर्ट के संचालक करण कहते हैं, ‘आजकल की शहरी जिंदगी से हर कोई बाकिफ है। देर रात तक लैपटॉप पर काम करना, टीवी या मोबाइल देखना, एक ऐसी आदत बन गई है कि उससे छुटकारा नहीं मिल पा रहा। डेडलाइंस को पूरा करने के लिए पेशेवर लोग आधी-आधी रात तक स्क्रीन से चिपके होते हैं। इसका सेहत पर असर पड़ता है। इसलिए स्लीपकेशन के दौरान उनके सुकून का विशेष ध्यान रखा जाता है। कोई डिस्टर्ब न करे ताकि वे साथ आए दोस्तों अथवा परिजनों से बात करें। सुबह के समय उनके लिए योग एवं ध्यान और शाम को संगीत का सेशन रखा जाता है, जिससे कि उनका दिमाग शांत रहे और वे अच्छी नींद ले सकें।’

कवर स्टोरी / अंशु सिंह

हाल के वर्षों में हमारे यात्रा करने के तरीके में एक अलग तरह का बदलाव आ रहा है। तेजी से घूमने-फिरने और व्यस्त शेड्यूल के बजाय अब लोग घुमक्कड़ी के दौरान आराम, शांति और सुकून भरे पलों की तलाश कर रहे हैं। इसे स्लीपकेशन या स्लीप टूरिज्म कहा जा रहा है। यानी एक ऐसी सोच-समझकर की गई धीमी गति वाली यात्रा, जो भाग-दौड़ के बजाय आराम को प्राथमिकता देती है।

सोने के लिए जा रहे घूमने

पेशे से चिकित्सक मेघना सेठ की दिनचर्या कुछ ऐसी रहती थी कि उन्हें नींद पूरी करने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती थी। नींद की इस कमी का असर कहीं न कहीं उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा था। उनके व्यवहार में हल्का चिड़चिड़ापन भी आ गया था, जो उनके पेशे के लिए सही नहीं था। उनके कुछ दोस्तों ने उन्हें कहीं घूमने जाने की सलाह दी और मेघना निकल पड़ीं, दोस्तों के साथ चार दिन के वीकेंड ट्रिप पर। लेकिन पहले दिन के गुजरते ही उन्होंने सबको साफ-साफ कह दिया कि वे अब और कहीं घूमेंगी नहीं, बल्कि कमरे में आराम करेंगी और अपनी नींद पूरी करेंगी। दोस्तों को पहले पहल उनका साथ घूमने से इंकार करना अच्छा नहीं लगा। कुछ देर तक सबने मौन साध लिया। लेकिन फिर मेघना ने उन्हें राजी कर लिया और इस तरह अगले दो दिन वे रिजॉर्ट में ही रहीं। गुरुग्राम के एक एमएनसी में सीनियर एनालिस्ट अमित मिश्रा भी जब कभी फैमिली ट्रिप पर जाते हैं, तो ये सुनिश्चित करते हैं कि वहां उन्हें अपनी नींद पूरी करने का पूरा मौका मिले। इसलिए वे ज्यादा भाग-दौड़ या आस-पास के इलाकों को एक्सप्लोर करने के बजाय रिजॉर्ट में रहकर ही छुट्टियां मनाने को प्राथमिकता देते हैं।



अनोखा होता है स्लीपकेशन का अनुभव

- ▶ इसमें व्यक्ति को सुबह बिना आलार्म के जागना होता है।
- ▶ बादलों को घुमड़ते हुए देखने के साथ कोई गर्म पेय पीना।
- ▶ अपने विचारों को लिखना या पूरी तरह से शांति में बैठना।
- ▶ बिना किसी मंजिल के लंबी सैर पर थू ही घूमने निकल जाना।
- ▶ इसमें कोई तय कार्यक्रम नहीं होता। हर पल को रिकॉर्ड करने का कोई दबाव नहीं होता।
- ▶ स्लीपकेशन के दौरान धीरे-धीरे कुछ बदलाव महसूस होते हैं।
- ▶ मेडिटेशन से मन शांत होने लगता है।
- ▶ शरीर आराम महसूस करने लगता है।



गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा ‘नवरंग’

याद नहीं करता कोई भी

याद नहीं करता कोई भी वक्त निकल जाने के बाद
लाथ छोड़ देते हैं अक्सर लोग संगल जाने के बाद

इस जग का दस्तूर यही है सब साथी हैं त्रियायारे के
घुस जाते हैं लोग घरों में सूरज ढल जाने के बाद

रूप-रंग, कौमार्य उसे नित बांधे रखता है गुलशन से
पास नहीं जाता फिर भौंरा गुल के फल जाने के बाद

इश्क हुआ तो बेफिक्री में कुछ भी संभव हो जाता है
ढल जाता है हर सांघे में लोह पिघल जाने के बाद

दिल से जो भी निकलेगा वो लौट नहीं पाएगा फिर से
जैसे लौट नहीं पाता है बीता कल जाने के बाद

केवल आप प्रतीक्षा करिए दिन के ढल जाने का ‘नवरंग’
परवानों की भीड़ लगेगी शम्भा जल जाने के बाद

लंगर / धर्मेन्द्र जोशी

आजकल अधिकतर शहरों की सड़कों पर जगह-जगह ‘कार्य प्रगति पर है!’ के बोर्ड लगे हुए दिख जाते हैं। बोर्ड धुंधला जाते हैं, मगर कार्य को गति नहीं मिल पाती है। प्रगति जमीन पर नहीं बल्कि केवल बोर्ड पर ही लिखी दिखाई देती है। यही वजह है कि जो गड़बड़ पिछली बारिश में नन्हें-नन्हें अवतरित हुए थे, वे अब पाताल के द्वार रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। न जाने कितने दो पहिया वाहन सवार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को खुद पर गिरा कर हमेशा के लिए उनकी स्मृति इनमें अंकित हो चुकी है।

इधर, शहर के लोग सड़क पर फैले कीचड़ की फिसलन से हलकान हो रहे हैं और उधर, नेता, अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदार स्वीकृत राशि पर अपनी-अपनी पकड़ बनाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यही कारण है कि जो कार्य तीन महीनों में पूर्ण होना था, वो एक साल तीन महीने के बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है। लोगों के घर धूल के गुबार से गुलजार हो रहे हैं। गृहिणियों का गृहकार्य बढ़ चुका है। वे सफाई में हाथ बंटाने के लिए अपने वीटो पावर का उपयोग कर

मेरी कॉलोनी में रहने वाले एक वृद्ध की दिनचर्या वर्षों से नहीं बदली थी। हर शाम वह चारपाई पर बैठकर दरवाजे की ओर टकटकी लगाए रहते। लोग समझते, शायद बेटे का इंतजार है। बेटा महीने में केवल एक बार आता। जल्दबाजी में हाल-चाल पूछता, दवाइयां रखता और कहता, ‘पिताजी, किसी चीज की जरूरत हो तो बता दिया कीजिए।’ वृद्ध मुस्कुरा देते, ‘सब है बेटा कुछ नहीं चाहिए।’

एक सर्द रात वह चुपचाप इस दुनिया से विदा हो गए। घर समेटते समय बेटे ने उनका पुराना तकिया उठाया। तकिया भारी लगा। खोलकर देखा तो उसमें न पैसे थे, न गहने, केवल संभालकर रखी छोटी-छोटी पर्चियां थीं। हर पर्ची पर एक तारीख और अधूरी-सी टीस लिखी थी, ‘आज बहुत मन था कि बेटा थोड़ी देर बैठ जाता।’ ‘आज पहली बार खाना अकेले खाया।’ ‘डॉक्टर ने कहा, बातें करते रहिए। मगर किससे?’ ‘आज बरामदे में दो कप चाय रखी दूसरी ठंडी हो गई।’

सबसे आखिरी पर्ची पर लिखा था, ‘अब उसे बुलाना मता वह बहुत व्यस्त होगा।’ पर्चियां पढ़ते-पढ़ते बेटे की आंखें धुंधला गईं। उसे पहली बार समझ आया कि उसने पिता को हर जरूरत पूरी की, पर उनके अकेलेपन को

कार्य प्रगति पर है!

शहर के लोग सड़क पर फैले कीचड़ की फिसलन से हलकान हो रहे हैं और उधर, नेता, अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदार स्वीकृत राशि पर अपनी-अपनी पकड़ बनाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यही कारण है कि जो कार्य तीन महीनों में पूर्ण होना था, वो एक साल तीन महीने के बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है।

घर के पुरुषों को भी बरामदे, कमरों और पोर्च की सफा-सफाई के लिए आदेश देती रहती हैं। इससे बचने के लिए काम-काजी पुरुष वर्ग, बहाने बनाकर अपने कार्यस्थल पर सुबह जल्दी जाते और शाम को विलंब से घर लौटते हैं।

सड़क के किनारे मौजूद गटर और नालियां भी लंबे समय से अपने जीर्णोद्धार के लिए खुली हुई हैं, जिससे जमा गंदे पानी में मच्छरों के झुंड बिना रोक-टोक के

यायावरी करते रहते हैं। उनकी सक्रियता से सरकारी और निजी अस्पताओं में मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया के मरीजों की लाइन दिन-प्रतिदिन लंबी होती जा रही है।

कुछ जागरूक नागरिकों ने अपने घर के सामने मौजूद जलयुक्त कुंड को पार करने के लिए पट्टिए के अस्थाई पुल का निर्माण कर रखा है। लेकिन सावधानी हटते ही उस पर भी दुर्घटना घटित हो जाती है। मुख्य सड़क से लगे मकान के रहवासी बेचारे जी,



लघुकथा / कृति आर.के. जैन

पिता का तकिया



कभी नहीं पढ़ा। उसने तर्किए को सोने से लगा लिया। उस दिन वह पहली बार फूट-फूटकर रोया, क्योंकि दुनिया का सबसे महंगा तकिया वही होता है, जिसमें रुई नहीं, अधूरी प्रतीक्षाएं भरी हों। रिश्ते अभाव से नहीं, उपेक्षा और प्रतीक्षा से दम तोड़ते हैं।



ऑनलाइन शॉपिंग का बढ़ता ट्रेंड ऑफर-रिटर्न ट्रैप से रहें सावधान

फेस्टिव सीजन के साथ ही जमकर शॉपिंग भी शुरू हो जाती है। इसी के चलते ऑनलाइन शॉपिंग में ऑफर्स और कई लालच दिए जाते हैं। इसको अच्छी तरह समझना और इसके जाल में फंसने से बचने के लिए सावधानी जरूरी है।

लाइफस्टाइल / विवेक कुमार

कभी बाजार जाने के लिए समय निकालना पड़ता था, दुकान-दुकान घूमना पड़ता था, फिर भी मनपसंद चीज मिलेगी या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती थी। अब वही खरीदारी मोबाइल स्क्रीन पर कुछ मिनटों में ही हो जाती है। कपड़ों से लेकर कॉस्मेटिक, किचन का सामान, जूते, बैग, बच्चों की चीजें और रोजमर्रा का राशन तक घर बैठे मंगाया जा सकता है। इससे महिलाओं को बहुत सुविधा हुई है। लेकिन इस सुविधा में नई तरह की चुनौतियां और फंसाने वाले जाल भी मौजूद होते हैं।

ऑफर के लालच से बचें: ऑनलाइन बाजार में ग्राहक को आकर्षित करने के लिए लगातार सेल, कूपन, फ्लेश डील, आज आखिरी मौका, सिर्फ दो पीस बाकी, मुफ्त डिलिवरी जैसे संदेश बार-बार इस तरह दोहराए जाते हैं कि आपके दिमाग में बैठ जाएं। ऐसे में कई बार हमें जरूरत नहीं होती, फिर भी हम ढेर सारी चीजें खरीद लेते हैं। क्योंकि ऑनलाइन खरीदारी में एक भ्रम यह बना दिया गया है कि यहां सब कुछ बहुत सस्ता मिल रहा है। ऐसे में लोग सोचते हैं, जब 40 फीसदी तक सस्ता है, तो खरीद ही लेना चाहिए। लेकिन जब हमें किसी चीज की जरूरत न हो, तो उसकी खरीदारी बचत नहीं बल्कि एक तरह का खर्च होता है। इसलिए किसी भी डील को देखकर सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए, अगर इस पर छूट नहीं होती, तो क्या मैं इसे खरीदता? अगर जवाब नहीं है, तो इसका मतलब है खरीदारी की जरूरत नहीं थी, बस विज्ञापन के प्रभाव में आकर खरीद लिया। एक बात और याद रखें ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ा आकर्षण तस्वीरों का होता है। शानदार रोशनी में खींची गई मॉडल की तस्वीर देखकर कोई ड्रेस बेहद खूबसूरत लग सकती है। लेकिन वास्तविक उत्पाद का रंग, कपड़े की गुणवत्ता या फिट का आकार जरूरी नहीं कि अच्छा ही हो। इसलिए केवल तस्वीर



पर भरोसा करना सही नहीं है। उत्पाद का विवरण पढ़ना भी बहुत जरूरी है।

जरूर पढ़ लें रिव्यू: जब ऑनलाइन खरीदारी करें, तो सबसे कारगर होते हैं पहले के खरीदारों के खरीद संबंधी रिव्यू। इसलिए जब भी ऑनलाइन कोई चीज खरीदें, तो उसके पहले ऑनलाइन रिव्यू जरूर पढ़ें। हालांकि यहां भी हर खरीदार की उसकी अपनी समीक्षा को बिल्कुल सत्य न मान लें। बेहतर है कि कई खरीदारों की प्रतिक्रियाएं पढ़ें, खासकर उन टिप्पणियों को विशेष रूप से देखें, जिनमें उत्पाद की कमियां विस्तार से बताई गई हों।

रेंटिंग स्टार्स से रहें सावधान: जहां तक रेंटिंग की बात है तो रेंटिंग के स्टार देखकर अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचें बल्कि लिखी हुई टिप्पणी का मतलब ज्यादा सच होता है। पांच सितारे देखकर तुरंत प्रभावित होने की बजाय, यह देखना ज्यादा उपयोगी होता है कि ग्राहक ने वास्तव में लिखा क्या है? कई बार हजारों लोगों की अच्छी रेंटिंग के बावजूद आपकी जरूरत के लिए उत्पाद अनुपयुक्त हो सकता है।

जान लें रिटर्न पॉलिसी: ऑनलाइन खरीदारी में एक भ्रम यह बना दिया गया है कि यहां सब कुछ बहुत सस्ता मिल रहा है। ऐसे में लोग सोचते हैं, जब 40 फीसदी तक सस्ता है, तो खरीद ही लेना चाहिए। लेकिन जब हमें किसी चीज की जरूरत न हो, तो उसकी खरीदारी बचत नहीं बल्कि एक तरह का खर्च होता है। इसलिए किसी भी डील को देखकर सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए, अगर इस पर छूट नहीं होती, तो क्या मैं इसे खरीदता? अगर जवाब नहीं है, तो इसका मतलब है खरीदारी की जरूरत नहीं थी, बस विज्ञापन के प्रभाव में आकर खरीद लिया। एक बात और याद रखें ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ा आकर्षण तस्वीरों का होता है। शानदार रोशनी में खींची गई मॉडल की तस्वीर देखकर कोई ड्रेस बेहद खूबसूरत लग सकती है। लेकिन वास्तविक उत्पाद का रंग, कपड़े की गुणवत्ता या फिट का आकार जरूरी नहीं कि अच्छा ही हो। इसलिए केवल तस्वीर

सही प्लेटफॉर्म चुनें: सस्ती कीमत देखकर किसी अनजान वेबसाइट पर तुरंत भुगतान करना जोखिमभरा हो सकता है। वेबसाइट का नाम, संपर्क, जानकारी, रिटर्न नीति और भुगतान का विकल्प देखकर ही खरीदारी करनी चाहिए।



किसी तरह अपनी हंसी पर नियंत्रण कर उन्हें बाहर निकाला। वे रुआंसी होकर कीचड़ से सने हुए कपड़े धारण किए घर में प्रविष्ट हुईं। अभी दो दिन पहले ही एक नवयुवक बाइक सवार मोबाइल पर अपनी प्रेयसी से बात करने में इतना मशगूल हुआ कि अपनी स्ट्राइलिश बाइक समेत नालीदर्शन को प्रवेश कर गया। बमुश्किल लोगों ने उसको बाहर निकाला। इस तरह की तमाम घटनाएं लगातार होती रहती हैं। कार्य में प्रगति भले न के बराबर हो लेकिन आते-जाते लोगों को ‘कार्य प्रगति पर है’ का बोर्ड जरूर दिखाई पड़ता है।

सड़क निर्माण में विलंब को पक्ष और विपक्ष के नेता आपदा में अवसर के रूप में देखते हैं। वे नेता जो चार साल पहले चुनावी रण में धूल काट चुके थे, वे एक लंबे अंतराल के बाद अपने पंख फड़फड़ा कर मुद्दा लपकने की चेष्टा में जुट जाते हैं, ताकि उनकी राजनीतिक बेरोजगारी दूर हो सके। वहीं सत्तासीन नेता यह प्रयास करते हैं कि सड़क निर्माण कार्य चुनाव के ठीक पहले ही पूर्ण हो, ताकि उनके अपने क्षेत्र में विकास कार्यों की फेहरिस्त में इसे जोड़ा जा सके और जाते-जाते के जरिए को और मजबूत किया जा सके।

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

कविता के आकाश में स्त्री चेतना के स्वर

कवियत्री आरती आस्था का पांचवां कविता संग्रह ‘छत पर लड़कियां’ कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुआ है। इन कविताओं की रेंज बहुत बड़ी ही नहीं बहुस्तरीय भी है। यहां सदियों से पितृसत्तात्मक सोच वाले समाज में पली-बढ़ी स्त्री को दारुण व्यथा के साथ ही स्त्री चेतना का वह स्वर भी गुंजता है, जो हर अनुचित प्रतिबंध को अस्वीकारता है। ‘छत पर खड़ी लड़कियां/देखते हुए डूबते



कविता संग्रह ‘छत पर लड़कियां’ कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुआ है। इन कविताओं की रेंज बहुत बड़ी ही नहीं बहुस्तरीय भी है। यहां सदियों से पितृसत्तात्मक सोच वाले समाज में पली-बढ़ी स्त्री को दारुण व्यथा के साथ ही स्त्री चेतना का वह स्वर भी गुंजता है, जो हर अनुचित प्रतिबंध को अस्वीकारता है। ‘छत पर खड़ी लड़कियां/देखते हुए डूबते

बदलाव को संग्रह की कई अन्य कविताओं में स्पष्ट तौर पर लक्षित कर सकते हैं। ‘मी लॉर्ड! मुझे ‘चाय दीजिए’ कविता में वह कहती है, मैंने कल कर दिया/मी लॉर्ड/उस लड़की का/परंपराओं, संस्कारों के हवन कुंड में/होम किए दे रही थी जो/खुद को/रखने को झूठा मान/घर परिवार का।’ ‘सुनो नादिया’ जैसी कविता को शामिल करने से इस संग्रह की कविताओं का कैमवास और भी विस्तारित सूरज को/सीखती हैं, डूबना नहीं है डूबना/यह प्रक्रिया भर है/दोबारा से उगने की।’ जैसी पंक्तियां यह साबित करती हैं कि स्वतंत्रचेता स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार मानने के बजाय नई उड़ान भरने को तत्पर रहती है। ‘बिंदी और सिंदूर’ कविता एक ऐसा बिंब उकेरती है, जो पारंपरिक प्रतीकों को भी नए संदर्भ में परिभाषित करती है। यहां स्पष्ट होता है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को स्वीकारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है। स्त्री की सोच में आए क्रांतिकारी

पुस्तक: छत पर लड़कियां (कविता संग्रह), लेखिका: आरती आस्था, मूल्य: 299 रुपये, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली



गणपति बप्पा का भव्य विसर्जन आस्था-सामूहिकता का उत्सव

पर्व-संस्कृति
धीरेज बसाक

विघ्न विनाशक गणपति की विदाई का दृश्य अपने आपमें भारतीय संस्कृति का एक अनूठा दृश्य होता है। सिर पर पगड़ी बांधे बुजुर्ग, जयघोष करते युवा और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी महिलाएं, कंधों पर गणपति की प्रतिमा उठाए भक्तगण और ढोल की थाप पर थिरकते अलग-अलग उम्र के लोग-सब एक ही स्वर में पुकारते हैं, ‘गणपति बप्पा मोरया!’ कुछ घंटे पहले तक जो प्रतिमा किसी घर, गली या मुहल्ले के एक मंडप की केंद्र बिंदु थी, विसर्जन के समय वह हजारों लोगों की साझी आस्था और भावनाओं का केंद्र बन जाती है। यही गणेश विसर्जन की सबसे बड़ी सांस्कृतिक विशेषता है। यही भव्य दृश्य आगामी (25 सितंबर) अनंत चतुर्दशी को फिर देखने को मिलेगा।

सामूहिकता-साझेदारी का उत्सव

गणेशोत्सव की खूबसूरती केवल प्रतिमा की स्थापना और पूजा में नहीं बल्कि उसके आस-पास निर्मित होने वाली सामुदायिक दुनिया में भी है। मुहल्ले में मंडप लगाना, मिलकर सजावट करना, सामूहिक रूप से प्रसाद तैयार करना और फिर मिलकर आरती में शामिल होना, वास्तव में गणेश स्थापना से लेकर गणेश विसर्जन तक एक लंबा सांस्कृतिक उल्लास लोगों के बीच छाया रहता है। यह उल्लास विसर्जन के समय चरम पर पहुंचकर भावुक विदाई में बदल जाता है। अगर गणेश विसर्जन को ध्यान से देखें तो लगता ही नहीं कि यह किसी मूर्ति का विसर्जन है। ऐसे लगता है जैसे अपने किसी अत्यंत प्रिय से हम बिछड़ रहे हों। गणेश-प्रतिमा विसर्जन के समय सामूहिकता का सौंदर्य देखने लायक होता है। कोई प्रतिमा उठता है, कोई रास्ता साफ करता है, कोई पानी बांटता है, कोई ढोल बजाता है, कोई फूल बरसाता है, कोई पीछे चल रहे बच्चों का ध्यान रखता है, यह समूचा उल्लास सामूहिकता और साझेदारी का उत्सव होता है।



मिट जाते हैं सभी भेदभाव

गणेश विसर्जन भारतीय समाज की उस पुरानी परंपरा को जीवित करता है, जिसमें उत्सव केवल देखने की चीज नहीं है, मिलकर जीने का आयोजन होता है। सामान्य दिनों में भले भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जाति, वर्ग, पेशा और आर्थिक स्थिति की अनेक दूरियां दिखाई पड़ती हों, लेकिन गणपति पूजा में यह कहीं नहीं दिखती।

किसी हाथ में आरती की थाली होती है, तो कोई रस्सी पकड़कर प्रतिमा के साथ चल रहा होता है, कोई ढोल बजा रहा

होता है और कोई नृत्य कर रहा होता है। यहां व्यक्ति की सामाजिक पहचान से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी साझी भागीदारी बन जाती है। यही वजह है कि गणेशोत्सव सिर्फ पूजा का पर्व नहीं बल्कि सामाजिक मेल-जोल का सार्वजनिक उत्सव होता है।

पीढ़ियों को जोड़ता उत्सव

गणेश विसर्जन सांस्कृतिक उत्सव कई पीढ़ियों को एक साथ जोड़ देता है। बुजुर्गों के पास परंपरा की स्मृतियां होती हैं, युवाओं के पास ऊर्जा और आयोजन की जिम्मेदारी संभालने का भाव होता है। बच्चे पूरे उत्सव में उत्सुकता और विस्मय के साथ भागीदार रहते हैं। एक बुजुर्ग जब बच्चे को समझाता है कि गणपति की स्थापना क्यों की जाती है और विसर्जन का अर्थ क्या है, तो यह सिर्फ एक धार्मिक जानकारी नहीं होती। यह उस

विशेष: अनंत चतुर्दशी, 25 सितंबर

अनंत चतुर्दशी के अवसर पर सैकड़ों ढोल की थाप, सामूहिक जयघोष और भक्तों की नम आंखों के बीच गणपति बप्पा की विदाई केवल एक प्रतिमा का विसर्जन नहीं, बल्कि सामूहिक आस्था और अपनत्व का उत्सव भी होता है। हजारों हाथ जब बप्पा को विदा करते हैं, तो हर कदम में परंपरा, साझेदारी और अगले बरस लौटने की उम्मीद साथ चलती है।

सांस्कृतिक स्मृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का जरिया होती है, जो ऐसी ही परंपराओं से मिलती है। इस तरह हर साल होने वाला विसर्जन परंपरा की पुनरावृत्ति के साथ-साथ उसके हस्तांतरण का भी अवसर बन जाती है।

विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास

गणपति विसर्जन का सबसे भावुक क्षण वह होता है, जब भक्त गणपति की प्रतिमा को विदा करते हैं, लेकिन इस विदाई में स्थाई वियोग का भाव नहीं होता। क्योंकि विदाई के दौरान जो जयकारा लगता है, उसमें विदाई के साथ-साथ वापसी का निवेदन कहीं ज्यादा मुखर होता है, ‘गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ।’ यह जयघोष भारतीय संस्कृति के एक गहरे जीवनदर्शन को व्यक्त करता है। यहां विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास मौजूद होता है। इसलिए विसर्जन का दुःख अगले आगमन की प्रतीक्षा के एहसास में कम हो जाता है। मिट्टी की प्रतिमा का पानी में विलीन होना भी इसी भाव को विस्तार देता है, जिस मिट्टी से आकृति बनी, वह फिर प्रकृति में लौट जाती है। प्रतीकात्मक रूप में यह प्रक्रिया यह बताती है कि रूप बदलता है, लेकिन संबंध और स्मृति बने रहते हैं।

गढ़ते हैं जीवंत लोक-संस्कृति

गणेश विसर्जन केवल धार्मिक जुलूस नहीं होता। ढोल-ताशे, लोकगीत, नृत्य, पारंपरिक वाद्य और सामूहिक जयघोष यह सब मिलकर एक जीवंत लोक-संस्कृति गढ़ते हैं। महाराष्ट्र में विशेषकर ढोल, ताशा तथा विसर्जन यात्रा का हिस्सा होते हैं। उनकी यह सामूहिक लय केवल संगीत नहीं पैदा करती बल्कि साथ चल रही भीड़ को भी एक रिश्ता, एक साझी ताल देती है। हजारों कदम जब एक ही ताल पर उठते हैं और एक ही ताल पर जमीन में गिरते हैं, तो व्यक्ति भीड़ का एक हिस्सा भर नहीं रहता बल्कि सामूहिक अनुभव का सहभागी बन जाता है। गणेश विसर्जन में यही सांस्कृतिक अनुभव हर कोई महसूस करता है।

साझी भावनाओं का सांस्कृतिक प्रदर्शन

गणेश प्रतिमा भले किसी एक परिवार ने स्थापित की हो या किसी सार्वजनिक मंडल ने, पर उसकी विदाई सामूहिक होती है। विसर्जन यात्रा जहां-जहां से गुजरती है, वहां-वहां के लोग इसका हिस्सा हो जाते हैं, फिर भले चाहे वो कुछ कदम चलकर इससे अलग हो जाएं। विसर्जन जुलूस जहां से गुजरता है, वह अजनबी भीड़ के रूप में नहीं गुजरता बल्कि हर जगह मौजूद लोग इसमें शामिल हो जाते हैं। इसलिए विसर्जन वास्तव में प्रतिमा को महज पानी में प्रवाहित करने की प्रक्रिया नहीं है, यह साझी आस्था, साझी जिम्मेदारी और साझी भावनाओं का सामूहिक और सांस्कृतिक प्रदर्शन है। *

डिजिटल इंपैक्ट
डी. जे. नंदन

एक समय था, जब बॉलीवुड सितारों की लोकप्रियता का पैमाना सिनेमाघरों के बाहर लगी भीड़, फिल्मी पत्रिकाओं के कवर और टीवी इंटरव्यू हुआ करते थे। किसी अभिनेता की फिल्म रिलीज होती थी, तो शहरों की दीवारें उसके पोस्टर से पट जाती थीं। आज का दौर उस दौर से बिल्कुल अलग है। अब किसी भी फिल्म की सफलता का पहला संकेत टिकट खिड़की पर नहीं बल्कि इंस्टाग्राम रील्स, यू-ट्यूब शॉर्ट्स और एक्स (ट्विटर) के ट्रेंडिंग हैशटैग में दिखाई देता है। बदल गई स्टारडम की परिभाषा: बॉलीवुड में स्टारडम का गणित इस सोशल मीडिया के युग में पूरी तरह से बदल चुका है। आज किसी अभिनेता की लोकप्रियता का पैमाना, सिर्फ उसकी अभिनय क्षमता नहीं बल्कि सोशल मीडिया पर उसकी फैन फॉलोइंग मानी जाती है। आज के इस डिजिटल दौर में फैन आर्मी और सोशल मीडिया पर पैदा होने वाले बज से किसी भी स्टार का असली स्टारडम तय होता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, अब हिंदी फिल्मों की खोज और दर्शकों को सिनेमाघरों तक पहुंचाने वाले सबसे प्रभावी माध्यमों में गिने जा रहे हैं। फैन आर्मी में बदला फैन क्लब: 1990 और 2000 के दशक में फिल्म स्टार्स के फैन क्लब हुआ करते थे। वे पोस्टर लगाते थे, अपने पसंदीदा एक्टर का जन्मदिन मनाते थे और कभी-कभी वो थिएटर के बाहर जहां उनके फेवरेट एक्टर की फिल्म लगी होती थी, वहां जश्न मनाया करते थे। लेकिन आज यही फैन क्लब, फैन आर्मी में तब्दील हो चुके हैं। किसी फिल्म का टीजर आते ही उस फिल्म के एक्टर के हजारों प्रशंसक उसे सोशल मीडिया में शेयर करते हैं। पहले जो चर्चा गली-गली तक पहुंचने के लिए कई दिन और कई हफ्तों लिया करती थी, आज वह चर्चा सोशल मीडिया के जरिए प्रशंसकों के बीच कुछ ही घंटों में पहुंच जाती है।

इनसे प्रूफ होता है सोशल मीडिया इंपैक्ट

‘अल्फा’ का टीजर और डिजिटल ट्रैकिंग: कुछ समय पहले आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म ‘अल्फा’ का टीजर आते ही सोशल मीडिया पर जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई। कई बड़े सितारों ने सार्वजनिक रूप से इसकी सरहना की, जिससे फिल्म को अत्यधिक डिजिटल बडत मिल गई। यू-ट्यूब फैनफेस्ट: वरुण धवन ने यू-ट्यूब फैनफेस्ट में अपनी फिल्म के गीत का लाइव प्रचार किया है।यह दिखाता है कि डिजिटल आयोजनों का महत्व अब पारंपरिक प्रेस कॉन्फ्रेंस से ज्यादा हो गया है। वायरल वीडियो का इंपैक्ट: 2026 के गणतंत्र



दिवस रिवरसल में सेनिकों का एक बॉलीवुड गीत पर गांव करते हुए वीडियो वायरल हुआ और पुराने हिट गीत को एक झटके में नई पीढ़ी तक पहुंचा दिया गया। इस तरह सोशल मीडिया पुराने कंटेंट को भी लोकप्रिय बनाने में देर नहीं लगाना। इंपलूएंसर मार्केटिंग: फिल्म निर्माता, इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब इंप्लूएंसर्स के साथ साझेदारी कर रहे हैं ताकि पारंपरिक विज्ञापनों से आगे सीधे युवाओं तक पहुंच सकें। हालिया बॉलीवुड अध्ययनों के अनुसार यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और कुछ एप्स अब दबक्यों को फिल्म देखने के लिए प्रेरित करने लगे हैं।

दूसरों की सलाह या उपदेश पर निर्भर होना या अपने जीवन के सवालों के जवाब हमेशा किसी और से पूछना, सही नहीं है। यह प्रवृत्ति क्यों लोगों में देखी जाती है? इसके बजाय हमें किस तरह अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम बनना चाहिए, आप जरूर जानना चाहेंगे।

खुद ही तलाशने चाहिए जीवन के सवालों के जवाब

सेल्फ मोटिवेशन

वीरेंद्र बहादुर सिंह

हमारे जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम अपने हर छोटे-बड़े सवाल का जवाब दूसरों से चाहते हैं। पढ़ाई किस विषय में करें, नौकरी कहाँ करें, विवाह किससे करें, किस रास्ते पर चलें, कौन-सा निर्णय सही होगा? इन सबका फैसला भी अक्सर हम किसी और की राय से लेते हैं। मानो कोई दूसरा व्यक्ति हमारे जीवन की पूरी किताब पढ़ चुका हो और हमें हमसे बेहतर जानता हो। सवाल है, लोग अपने जीवन के निर्णय लेने के लिए दूसरों से सलाह या उपदेश क्यों लेना चाहते हैं?

आकर्षित करते हैं उपदेश

अक्सर लोग इसलिए उपदेश सुनना या दूसरों की सलाह मानना पसंद करते हैं, क्योंकि इससे जिम्मेदारी किसी और पर डालना आसान हो जाता है। अगर निर्णय सफल हुआ तो गाइड करने वाले की महानता और अगर असफल हुआ तो दोष भी उसी पर डाल देना आसान होता है। इस प्रकार व्यक्ति स्वयं सोचने और अपने निर्णय की जिम्मेदारी लेने से बच जाता है। दूसरी बात, जब ईंसान किसी समस्या का सामना करते हुए मानसिक रूप से टूटता है तो उसके भीतर असुरक्षा का भाव भी पैदा होता है। तब उसका मन किसी व्यक्ति, किसी विचारधारा, किसी गाइड या किसी समूह की छाया तलाशने लगता है ताकि उसे फिर से मानसिक सुरक्षा मिल सके।



विचारधारा को अपनाना चाहिए और किसे छोड़ देना चाहिए? ऐसे उपदेश सुनने में सरल लगते हैं। अगर कोई ईंसान ऐसे किसी के भी उपदेश को बिना सोचे-विचारे मानने लग जाए, तो उसकी स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

गाइड के तौर पर लें सलाह

दूसरों के अनुभव हमारे लिए दिशासूचक संकेत हो सकते हैं, लेकिन वे हमारी मजल तय नहीं कर सकते। जैसे सड़क किनारे लगा बोर्ड केवल दिशा बताता है, यात्रा हमारे स्थान पर नहीं करता, उसी प्रकार विद्वानों, गुरुओं, शिक्षकों और अनुभवी लोगों का काम केवल रास्ता दिखाना है। उस रास्ते पर चलना या न चलना हमारा निर्णय होना चाहिए।



स्वविवेक से ही लें निर्णय

अच्छे विचार वही हैं, जो व्यक्ति को भीतर से बदल दें, उसकी दृष्टि को व्यापक बना दें और उसे अधिक संवेदनशील, अधिक स्वतंत्र तथा अधिक जिम्मेदार बना दें। दूसरों की बातें सुनिए, उनके अनुभवों से सीखिए, महान ग्रंथ पढ़िए, श्रष्ट विचारकों का अध्ययन कीजिए, लेकिन किसी की बात को अंतिम सत्य मानकर अपनी सोच बंद मत कीजिए। याद रखिए, जीवन का सबसे बड़ा गाइड अंततः हमारा विवेक और अपना अनुभव ही होता है। कहने का मतलब है कि जीवन के हर महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर बाहर यानी दूसरों की सलाह में नहीं, हमारे ही भीतर छिपा होता है। उसे खोजने का श्रम हमें स्वयं करना पड़ता है। वही श्रम हमें परिपक्व बनाता है, वही आत्मविश्वास देता है और वही वह शाश्वत संतोष प्रदान करता है जिसे कोई तैयार उपदेश कभी नहीं दे सकता। *

काफी सिर्फ एक पेय नहीं है, बल्कि यह वैश्विक संस्कृति और न जाने कितनी अनेकही कहानियों का हिस्सा भी है। सुबह या शाम गरमा-गरम कॉफी पीना दुनिया के करोड़ों लोगों की दिनचर्या का हिस्सा है। कॉफी बाँस को वनस्पति विज्ञान के नजरिए से देखा जाए, तो यह नाम पूरी तरह से एक भ्रांति है। कॉफी का एक छोटा पेड़ होता है, जिस पर चमकीले लाल रंग के फल लगते हैं, जिन्हें ‘कॉफी चेरी’ कहा जाता है। इन फलों के अंदर दो बीज होते हैं। जब फल पक जाते हैं, तो उनके गूदे को हटाकर इन बीजों को निकाला जाता है, जिन्हें हम भूनकर कॉफी पावडर बनाते हैं। क्या आप जानते हैं कि कॉफी से जुड़े कुछ किस्से भी बेहद मजेदार और हैरान करने वाले हैं?

कॉफी के खिलाफ महिलाओं का आंदोलन: 17वीं शताब्दी के लंदन में कॉफी हाउसेस, पुरुषों के सामाजिक जीवन का मुख्य केंद्र बन गए थे। पुरुष दिन भर घरो से बाहर रहकर कॉफी हाउसों में राजनीति, व्यापार और दर्शनशास्त्र पर चर्चा करते थे। इससे तंग आकर साल 1674 में लंदन की महिलाओं ने एक अनेखा मोर्चा खोला, जिसे हिस्ट्री में ‘द विमैस पिटीशन अगेंस्ट कॉफी’ के

पक्षी जगत
एन. के. अरोड़ा

जमीन से मीलों ऊपर उड़ते हुए कुछ पक्षी जब हजारों किलोमीटर की अपनी लंबी यात्रा पर होते हैं, तो हर समय जगें हुए नहीं होते, बीच-बीच में सोते भी हैं। फिर चाहे वे आसमान में उड़ रहे हों, उसके नीचे चारों तरफ हजारों मील तक समुद्र ही क्यों न पसरा हो। यही नहीं अगर सैकड़ों किलोमीटर तेज आंधी भी चल रही होती है, तो भी उनकी सेहत पर फर्क नहीं पड़ता। वे उस समय भी उड़ते हुए अपनी जरूरी नौद ले लेते हैं। ऐसी ही अद्भुत विशेषताओं वाले पक्षियों में ग्रेट फ्रिगेटबर्ड भी शामिल है।

वैज्ञानिकों ने किया अँज्वर्य: ग्रेट फ्रिगेटबर्ड पर लगातार नजर रखते हुए वैज्ञानिकों ने पाया है कि यह कई-कई दिनों तक आसमान में उड़ते हुए जमीन पर नहीं उतरता और बिना रुके अपनी यात्रा जारी रखता है। ऐसा करते हुए इसके मस्तिष्क का एक हिस्सा घंटों-घंटों आराम करता है और दूसरा हिस्सा जरूरी काम यानी उड़ान को संचालन करता है। ऐसा करते समय इसकी एक आंख बंद हो सकती है और मस्तिष्क का विपरीत हिस्सा आराम कर सकता है, जबकि दूसरी आंख और मस्तिष्क का दूसरा हिस्सा संजग रहता है और अपनी परिस्थितियों तथा वातावरण पर लगातार नजर रखता है।

रोचक / शिखर चंद जैन टेस्टी कॉफी से जुड़ी इंट्रेस्टिंग स्टोरीज



हिस्सा माना जाता था। वहाँ एक कानून था कि यदि कोई पति अपनी पत्नी को रोजाना एक निश्चित मात्रा में कॉफी उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता था, तो पत्नी को इस आधार पर अपने पति से कानूनी रूप से तलाक लेने का पूरा अधिकार था। उस दौर में पुरुषों के लिए पत्नी के लिए कॉफी का इंतजाम करना सबसे जरूरी काम माना जाता था। *

आपको जानकर अचरज होगा कि आकाश में कई मील की ऊँचाई पर उड़ते पक्षी अपनी लंबी उड़ान के दौरान सो भी लेते हैं। उड़ते-उड़ते सोने का यह कमाल वे कैसे कर लेते हैं?

कैसे बेफिक्र होकर सोते हैं आसमान में उड़ते पक्षी



हवा का भी लेते हैं सहारा: वैज्ञानिकों ने यह भी पाया है कि ग्रेट फ्रिगेटबर्ड और लंबी उड़ान भरने वाले अन्य पक्षी उड़ते समय हवा को अपने एक सहारे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि जब वे ऊँचे आसमान में लंबी उड़ान पर होते हैं, तब बार-बार पंख नहीं फड़फड़ाते। वास्तव में समुद्र के ऊपर उठने वाली गर्म हवा और वातावरण में मौजूद हवा की धाराओं का बड़ी चतुराई से इस्तेमाल करते हुए ये पक्षी उसमें ग्लाइडिंग करते हैं। यह ऊर्जा बचाने और लगातार उड़ान के बावजूद न थकने का एक सीक्रेट तरीका भी है। जैसे कोई ग्लाइडर

विमान, हवाओं की धाराओं का इस्तेमाल करते हुए कम या बिल्कुल कम ऊर्जा का इस्तेमाल करके उड़ान की दूरी तय कर सकता है। उसी तरह ये पक्षी भी वातावरण की ऊर्जा को अपने हित में इस्तेमाल करने की जुगत जानते हैं।

ऐसे लेते हैं हवा में नौद: वैज्ञानिकों ने अब तक जो स्टडी की है, उसके आधार पर आसमान में लंबी उड़ान के दौरान पक्षियों की नौद सीमित तथा नियंत्रित होती है। इसे वैज्ञानिकों ने ‘स्लो वेब स्लीप’ माना है और पाया है कि उड़ान के दौरान इनकी यह नौद जमीन पर उनके सोने की तुलना में बिल्कुल अलग होती है।